चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र



50

8



दुर्योधन को गुस्सा आ गया। उसने भाइयों से मिलकर पाण्डव सेना को नष्ट करने का निश्चय किया। श्वेत, भीष्म को छोड़कर दुर्योधन आदि पर आक्रमण करने लगा। वे उसके आक्रमण से तितर बितर हो गये। तुरत श्वेत, भीष्म को ढूँढता निकला। फिर दोनों का युद्ध हुआ। उसने भीष्म का धनुष और झण्डा तोड़ डाला। कौरवों ने सोचा कि उसने भीष्म को मार दिया था। पाण्डवों ने खुशी से शंख बजाये।

दुर्योधन, भीष्म की सहायता के लिये अपने योद्धा ले गया। उसने उनसे कहा-"तुम डरो मत। भीष्म के हाथ अभी श्वेत मरनेवाला है।" जल्दी ही वाल्हिक, कृतवर्मा, कृप, शल्य, विकर्ण, आदि कई वीर भीष्म की मदद के लिये गये। और अकेले श्वेत से युद्ध करने लगे।

श्वेत ने इतने लोगों से लड़ते हुए भी भीष्म का बाण तोड़ दिया, और उस पर अपना बाण मारा। भीष्म जैसा शूर भी उसके बाणों को बीच में नहीं काट पाया। यह देख कौरव सैनिकों की हिम्मत जाती रही।

परन्तु भीष्म का रोष बढ़ गया। उसने अपने बाणों से श्वेत के रथ, घोड़े, और सारथी को नष्ट कर दिया। श्वेत ने पृथ्वी पर उतर कर एक प्रलयङ्कर शक्ति भीष्म पर छोड़ी। भीष्म ने आग उगलती उस शक्ति को बीच में ही रोक दिया। श्वेत ने एक बड़ी गदा उठाकर भीष्म के रथ पर फेंकी। उसकी चोट से रथ चूर चूर हो गया परन्तु भीष्म आपत्ति को आता देख पहले ही रथ से उतर गया था।

भीष्म ने एक और रथ पर चढ़कर श्वेत पर हमला किया। इस बीच पाण्डव

योद्धा श्वेत की मदद के लिये भागे भागे आये। परन्तु भीष्म ने अपने बाणों से उनको पास नहीं आने दिया। फिर उसने श्वेत पर ब्रह्मास्त्र-सा तेज बाण छोड़ा। वह श्वेत के कवच और शरीर में से होता हुआ पृथ्वी में घुस गया।

श्वेत के मरते ही विराट के एक और लड़के, शंख ने शल्य को मारने का निश्चय किया। कौरव योद्धाओं ने शल्य को शंख के हाथ मरने न दिया। उनकी सहायता के लिये भीष्म आया। और अर्जुन शंख की रक्षा कर रहा था।

पहले दिन के युद्ध में, भीष्म ने जो प्रताप दिखाया उससे पाण्डव सेना कीड़े मकोड़ों की तरह नष्ट हुई। सूर्यास्त तक भीष्म हत्याकाण्ड चलता रहा।

पहिले दिन का युद्ध समाप्त हुआ।

रात को युधिष्ठिर अपने भाइयों और कुछ योद्धाओं को लेकर कृष्ण के पास गया। पहले दिन के युद्ध से युधिष्ठिर हतोत्साह हो गया था।

उसने कृष्ण से कहा-"ऐसा लगता है, भीष्म हमारी सेना और हमारे योद्धाओं की बलि लेकर ही रहेगा।



राज्य लोभ के लिये मैं इस युद्ध के लिये उद्यत हुआ था। मैं नहीं चाहता कि मेरे कारण ये सब योद्धा, भीष्म द्वारा मारे जायें। मेरे कारण मेरे सब भाई घायल हुए हैं। मैं अपने सिर पर यह पाप नहीं लेना चाहता। मैं बनों में जाकर तपस्या करूँगा।

हम में केबल अर्जुन ही एक है, जो अस्त्र-शस्त्र का उपयोग भली भाँति जानता है, वह आज ठीक तरह न लड़कर, पीछे पीछे ही रहा। भीम ही बीर की तरह लड़ा। हम सब भयभीत हो देख रहे थे कि भीष्म हमारी सेना को निगलता सा गया। अगर



तुम चाहते हो कि मैं युद्ध का परिचालन करूँ, तो मैं चाहता हूँ कि तुम ऐसे वीर को हमारी सेना में चुनो, जो भीष्म को मार सके। अगर तुम्हारी कृपा न रही तो हम इस युद्ध में कदापि न जीत सकेंगे।

कृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा-"तुम्हारे शोक करने की जरूरत नहीं है। तुम्हारा सेनापति धृष्टद्युम्न है ही। ये सब राजा तुम्हें विजय दिलवायेंगे। तुम्हारे भाई प्रसिद्ध वीर हैं। शिखण्डी के हाथ भीष्म हो न हो मरकर रहेगा। फिर तुम क्यों दुःखी होते हो?" यह सुन सब का हौसला बढ़ा।

युधिष्ठिर ने धृष्टद्युम्न की ओर मुड़कर कहा-"सेनापति! देवताओं के लिए कुमारस्वामी जिस प्रकार है, उस प्रकार तुम हमारे लिए हो। तुम आगे रहकर हम सब का पथप्रदर्शन करो, और हमें इस युद्ध में विजय दिलाओ।"

"महाराज! आप सन्देह न कीजिये। मैं युद्धोन्मत्त भीष्म, द्रोण आदि को अवश्य पराजित करूँगा। द्रोण मेरे ही हाथ मारा जायेगा। अब आगे आगे देखिये, युद्ध कैसे चलता है।" धृष्टद्युम्न ने उनसे कहा।

यह सुनकर सब में नया जोश आ गया।

"कल के युद्ध में को-चारुण व्यूह की व्यवस्था कीजिये, ताकि हमारी सेना शत्रुओं के लिए अजेय हो।" युधिष्ठिर ने धृष्टद्युम्न से निवेदन किया। धृष्टद्युम्न इसके लिए मान गया।

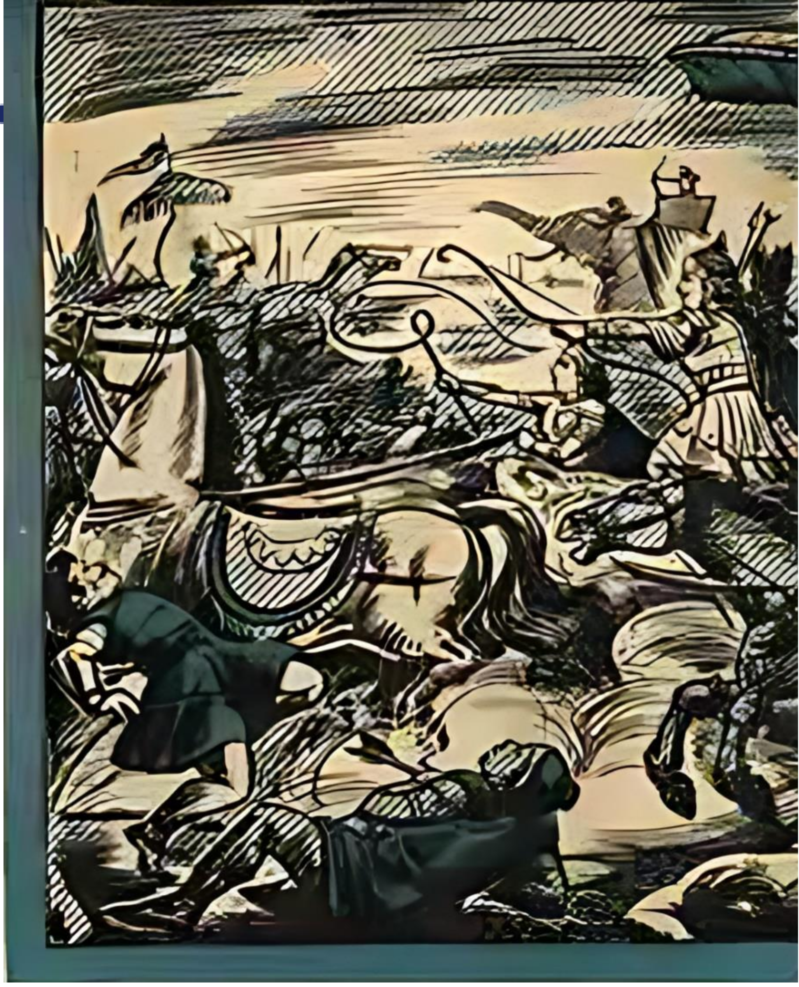
दूसरे दिन प्रातः काल हुआ। सूर्योदय से पहले ही पाण्डव सेना युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गई। आज सेना के सामने अर्जुन था। सेना कोञ्च पक्षी के आकार में खड़ी की गई

थी। उसके सिर, आँख, गला, पंख, पूँछ आदि स्थलों पर वीरों को नियुक्त किया गया। पंखों की जगह भीम, और धृष्टद्‌युम्न थे। इस व्यूह के आगे अर्जुन था, जो मेरुपर्वत की तरह उस दिन चमचमा रहा था।

उधर दुर्योधन ने भी अपनी सेना को एक व्यूह में खड़ा करने के लिए आज्ञा दी। उसके विविध पार्श्वों की रक्षा के लिए, और भीष्म के सहायतार्थ महायोद्धा नियुक्त किये गये। यह सेना सूर्योदय होते ही युद्ध के लिए निकल पड़ी। दोनों पक्ष की सेना शंखनाद के साथ युद्ध भूमि में आई।

दूसरे दिन का युद्ध प्रारम्भ हो गया। दोनों तरफ की सेना मरने मारने के लिए तैयार हो युद्ध करने लगी। भीष्म बाण चढ़ाकर, पाण्डव सेना के पास आया। उसका भीम, अर्जुन, अभिमन्यु, कैकेय, विराट, धृष्टद्‌युम्न आदि ने मुकाबला किया। भीष्म ने बाण वर्षा करके पाण्डव व्यूह को तोड़ दिया।

यह देख अर्जुन को गुस्सा आया। उसने कृष्ण को भीष्म के पास ले



जाने के लिए कहा। उसे लगा, यदि भीष्म को तुरन्त न मारा गया तो उसकी तरफ के योद्धा उसके हाथों मारे जायेंगे। भीष्म के पास जाते जाते रास्ते में अर्जुन, कौरव सेना को तहस नहस करता गया। तब भीष्म के साथ द्रोण, कृप, शल्य, दुर्योधन अश्वत्थामा, विकर्ण आदि ने अर्जुन का मुकाबला करके उस पर शर परम्परा का प्रयोग किया।

अर्जुन ने उनके बाणों की परवाह न की। उसने उनके उन सब बाणों का उत्तर दिया। इस बीच सात्यकी, विराट,



धृष्टद्‌युम्न, उपपाण्डव, अभिमन्यु, अर्जुन की मदद करने आये।

दोनों पक्षों में भयङ्कर युद्ध हुआ। अर्जुन अपने गाण्डीव से कौरव सेना का संहार करने लगा। तब दुर्योधन ने भीष्म से कहा-"दादा! अर्जुन हमारी सेना का नाश कर रहा है। तेरे कारण ही तो कर्ण अभी युद्ध में नहीं आया है। इसलिए अर्जुन को मारने का उपाय तुम्हें ही सोचना होगा।"

"छी, यह भी क्या क्षत्रिय धर्म है!" कहकर भीष्म ने अर्जुन पर आक्रमण किया। दोनों एक दूसरे को ललकार कर युद्ध करने लगे। उन दोनों ने एक दूसरे के झण्डे तोड़ दिये। एक दूसरे के घोड़ों को मारा। भीष्म ने गुस्से में कृष्ण पर तीन बाण छोड़े। कृष्ण खून से तरबतर हो गया। इसके उत्तर में अर्जुन ने भीष्म के सारथी पर तीन बाण छोड़े। वे दोनों एक दूसरे को मारने के लिए ही युद्ध कर रहे थे। पर कोई भी दूसरे को जीतने नहीं देता था।

ये इस तरह युद्ध कर रहे थे कि उधर द्रोण और धृष्टद्‌युम्न में द्वन्द्व युद्ध प्रारम्भ हो गया। शुरू में दोनों समान रूप से लड़े। एक दूसरे पर उन्होंने जोर से बाण छोड़े। परन्तु लड़ते लड़ते ऐसा लगा, जैसे द्रोण धृष्टद्‌युम्न को परास्त कर देगा। उसने धृष्टद्‌युम्न के धनुष, रथ, सारथी, घोड़ों को नष्ट कर दिया। धृष्टद्‌युम्न ने द्रोण की शक्ति और गदा को अपने बाणों से काट दिया। जब धृष्टद्‌युम्न तलवार और ढाल लेकर उससे लड़ने आया, तो द्रोण ने बाण वर्षा करके उसको पास न आने दिया।

इस स्थिति में भीम, पृष्टद्युम्न की सहायता के लिए आया। उसे उसने एक और रथ में चढ़ाया। यह देख दुर्योधन ने द्रोण के रक्षणार्थ कलिङ्ग के राजा को सेना के साथ भीम पर आक्रमण करने के लिए भेजा।

कलिङ्ग के राजा ने अपनी सेना से भीम को घेर लिया। उसने और उसके लड़के शुक्रदेव ने भीम पर बाण छोड़े। जल्दी भीम के रथ के घोड़े मारे गये। भीम ने जब खड़े रथ से लोहे की गदा शुक्रदेव पर फेंकी तो वह मर गया। गदा की चोट से उसका झण्डा भी टूट गया।

इस बीच कलिङ्ग सेना के रथों ने भीम को घेर लिया। भीम ने एक ढाल और तलवार लेकर कलिङ्ग सेना पर हमला किया। कलिङ्ग सेना ने भीम पर तेज़ बाणों की वर्षा की। भीम उनको अपने तलवार से काटता रहा। और उसने कलिङ्ग राजा के लड़के भानुमन्त पर हमला किया। वह हाथी पर सवार था। उसने भीम को देखकर जोर से गर्जन किया। गर्जन सुन भीम को गुस्सा आया और उसने और भयङ्कर गर्जन किया। भीम हाथी के दान्त पकड़कर एक छलाङ्ग में



हाथी पर जा चढ़ा और तलवार से भानुमन्त और उसके हाथी को मार दिया।

फिर भीम, यम की तरह कलिङ्ग सेना का नाश करने लगा। पृथ्वी पर चलते हुए, सिवाय तलवार के बिना किसी शस्त्र के वह हाथियों को गिराने लगा। सैनिक हजारों की संख्या में मारे गये। अनेक घोड़े और हाथी मारे गये। रथ उसके पास न आ सके। और जो रथिक पास आये भी वे भीम द्वारा मारे गये। बाणों से बचने के लिए वह लगातार तलवार घुमा रहा

था। इस बीच कलिङ्ग की बहुत सी सेना मारी गई।

इतने में कलिङ्ग का राजा श्रुतायुष सामने आया। भीम को उसने बाणों से सताया, पर इस बीच भीम का सारथी अशोक एक और रथ में वहाँ आया। भीम ने उस रथ पर चढ़कर श्रुतायुष से युद्ध किया। जल्दी ही भीम ने उसे भी मार दिया।

भीम को अकेला युद्ध करता देख धृष्टद्युम्न फूला न समाया। उसने शिखण्डी आदि योद्धाओं से कहा- "जाओ, भीष्म आदि का मुकाबला करो।" और वह स्वयं सात्यकी को लेकर भीम के पास शीघ्र ही आया।

इतने में कौरव सेना में कुहराम मच गया। यह सुन कि भीम कौरव सेना का संहार कर रहा था, भीष्म भीम की ओर आया। भीष्म का भीम, सात्यकी, धृष्टद्युम्न आदि के साथ युद्ध हुआ।

भीष्म ने भीम के घोड़ों को मारा। जब भीम ने उस पर शक्ति फेंकी तो उसने उसको बाण से काट दिया। धृष्टद्युम्न भीम को अपने रथ पर बिठाकर कहीं ले गया। परन्तु उसी समय सात्यकी ने भीष्म के सारथी को मार दिया। घोड़े बिदक उठे और वे रथ को लेकर भाग खड़े हुए।

यह देख आनन्दित हो भीम ने धृष्टद्युम्न का आलिङ्गन किया। उसके साथ सात्यकी के पास आया, सात्यकी ने रथ से उतरकर, भीम को गले लगाकर कहा-"भीम! धन्य है तुम्हारी वीरता। अकेले ही तुमने कलिङ्ग के राजा, उसके दोनों लड़के और उनके बहुत से योद्धाओं को मार दिया।" उसने उसको बधाई दी। इतने में दुपहर हो गई।





[१७]

[चन्द्रवर्मा को शिवपुर नामक नगर में सुबाहु दिखाई दिया। उससे उसको धीरमल्ल के बारे में मालूम हुआ। उसी समय एक दूत ने आकर बताया कि सर्पकेतु एक बड़ी सेना के साथ धीरमल्ल का पीछा कर रहा था। सुबाहु ने धीरमल्ल की सहायता के लिये जाना उचित समझा। बाद में --]

चन्द्रवर्मा को भी उस परिस्थिति में सुबाहु की बात जँची। देखते देखते नगर के सैनिक एक जगह जमा हो गये।

थोड़ी देर में सारी सेना नगर के प्राकार पार करके उत्तर की ओर चली। चन्द्रवर्मा, सुबाहु की सेना के आधिकों के अग्रभाग के साथ था।

रात भर सेना बिना कहीं रुके चलती गई। सूर्योदय में अभी दो तीन घण्टे थे कि एक पहाड़ के मोड़ से दौड़ते घोड़ों की आहट सुनाई दी। वे घुड़सवार मित्र थे या शत्रु, यह जानने के लिये दस सवारों को लेकर चन्द्रवर्मा और सुबाहु सेना से अलग होकर बहुत तेजी से आगे बढ़े।

ठीक मोड़ पर उन्होंने चार घुड़सवारों को देखा। अन्धेरे में सुबाहु को देखते ही उन्होंने अपने घोड़े रोके और कहा-



"सेनापति, हमें राजप्रतिनिधि वीरमल्ल ने भेजा है। जब हमारे सैनिक नगर की ओर यहाँ आ रहे थे, तो सर्पकेतु नाम के राजा की सेना ने पगडण्डी से आकर उनको रोका। युद्ध हुआ। हमारे बहुत-से सैनिक मारे गये। राजप्रतिनिधि, अपने घुड़सवारों के साथ नगर की ओर आते हुये शत्रुओं को रोकते, धीमे धीमे पीछे हट रहे हैं।"

सैनिक अभी कह ही रहे थे कि कुछ और घुड़सवारों को उस तरफ उन्होंने आते देखा। देखते देखते धीरमल्ल बड़ी तेजी से

उनके पास आया। "सुबाहु, अब हमें नगर की रक्षा के लिये जाना होगा। सर्पकेतु से...." वह कहता कहता रुका। चन्द्रवर्मा को देखकर उसको अचरज हुआ, फिर यकायक खुशी में वह घोड़े पर से एक छलाङ्ग में उतरा-"महाराज" चिल्लाता वह चन्द्रवर्मा के पास भागा भागा आया। उससे हाथ मिलाया।

"धीरमल, मुझे यह कभी विश्वास न था कि मैं फिर तुमसे मिल सकूँगा। परन्तु आज हम इन विचित्र परिस्थितियों में मिल रहे हैं। फुरसत से बात करने का समय नहीं है। चलो, नगर की रक्षा के लिये चलें।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

सेनापति धीरमल्ल ने एक क्षण सामने की सेना और पीछे से आते हुए घुड़सवारों को देखा फिर कहा- "महाराज! आपके आने से परिस्थिति बदल गई है। सर्पकेतु से आखिरी युद्ध करने का अब समय समीप आ गया है। यह युद्ध चाहे नगर में हो या नगर से बाहर....कहीं भी हो, हमारे लिए दोनों बराबर हैं। इस तरफ से आनेवाली सेना मुख्यतः घुड़सवारों की है। पदाति सब पहाड़ के पीछे के मैदान में

हैं। व्यूह बनाने के लिए हमें कुछ समय लगेगा।"

यह कहकर उसने पीछे की ओर देखा। फिर सुबाहु की ओर मुड़कर कहा-"सुबाहु, सेना को उस पहाड़ की घाटी में ले जाओ। घाटी की रक्षा के लिए थोड़ी सेना काफी है। वहाँ कुछ घुड़सवार और हट्टे कट्टे तीरन्दाजों को पहरे पर रखो।" कहकर, वह चन्द्रवर्मा के साथ घाटी के द्वार की ओर गया।

थोड़ी देर में सारी सेना ने घाटी में प्रवेश किया। चन्द्रवर्मा ने धीरमल्ल से संक्षेप में यह सब कहा, जो उस पर वीरपुर छोड़ने के बाद बीती थी। धीरमल्ल ने बड़े ध्यान से वह सब सुना। फिर विनयपूर्वक उसने कहा-"महाराज! सुबाहु ने आपको बता ही दिया होगा कि हमने क्या क्या मुसीबतें झेलीं और कैसे हम शिवसिंह राजा की नौकरी में आये और कैसे में राज प्रतिनिधि नियुक्त किया गया, और आज अचानक हमारा सर्पकेतु से भी सामना हो रहा है। उस दुष्ट से कभी न कभी



तो हमें युद्ध करना ही पड़ता। वह आज ही क्यों न किया जाय? मिलेगी तो विजय मिलेगी, नहीं तो वीर स्वर्ग। हमारे सामने और कोई मार्ग नहीं है।"

"हाँ, धीरमल्ल! स्वदेश छोड़कर इस तरह देश विदेश में भटकते रहने का कोई अर्थ नहीं है। सेना इकट्ठी करो। आओ सर्पकेतु का हिसाब पूरा कर दें।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

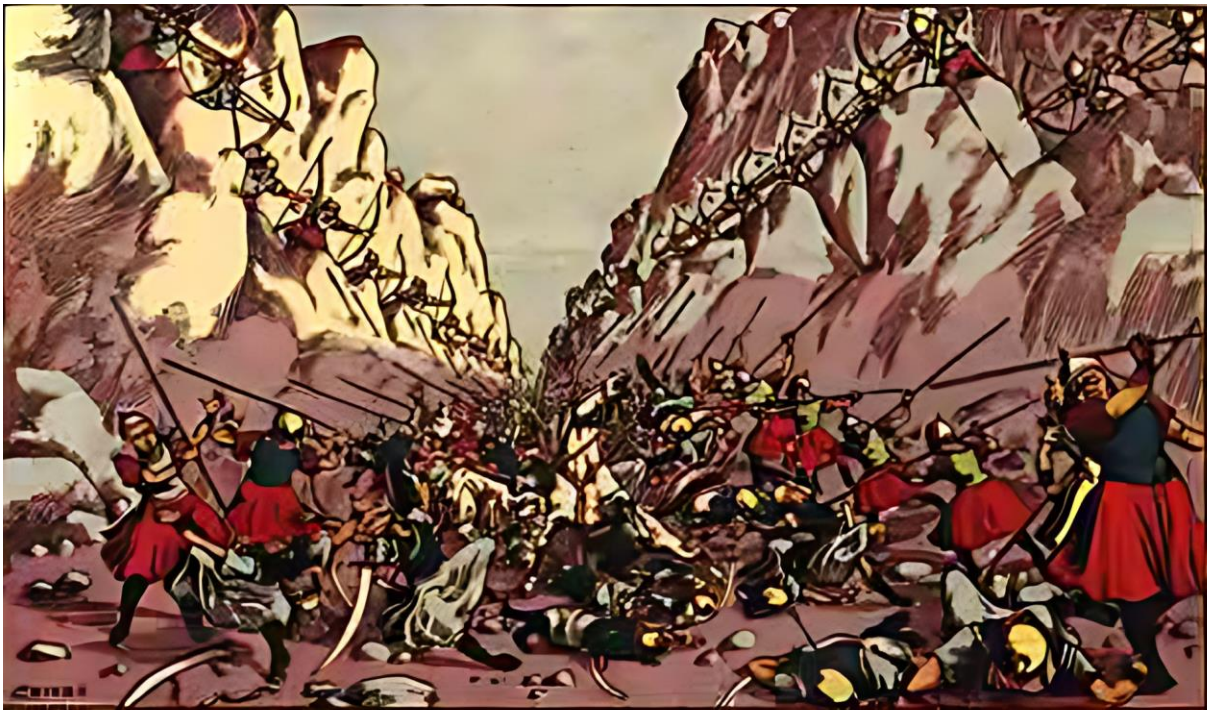
चन्द्रवर्मा अभी कह रहा था कि घाटी के द्वार पर कोलाहल प्रारम्भ हुआ। वहाँ नियुक्त तीरन्दाज धनुष पर बाण रख कर द्वार की ओर छोड़ रहे थे। कुछ घुड़सवार

आगे बढ़कर भाला हाथ में ले उन शत्रुओं को मार रहे थे, जो घाटी के अन्दर आने की कोशिश कर रहे थे।

"महाराज! सर्पकेतु घाटी में प्रवेश करने का प्रयत्न कर रहा है। उस तङ्ग घाटी में दोनों तरफ से उस पर हमला करना ही हमारा व्यूह हैं।" कहकर धीरमल्ल झट अपने घोड़े पर सवार हुआ। चन्द्रवर्मा भी एक छलाङ्ग में अपने घोड़े पर चढ़ः बैठा।

चन्द्रवर्मा और धीरमल्ल ने अपनी सेना को दो भागों में बाँट दिया और दोनों को घाटी के दोनों तरफ खड़ा कर दिया। सुबाहु कुछ पदातियों और घुड़सवारों को लेकर घाटी के द्वार पर तैनात था। सावधानी से इधर उधर देख रहा था।

सर्पकेतु की सेना तङ्ग घाटी में आने के लिए जोर-शोर से प्रयत्न करने लगी। हजारों की संख्या में उसके पदाति और घुड़सवार, भयङ्कर रूप से गरजते हुए अन्दर आने के लिए कोशिश करने लगे। उनमें से कई द्वार के समीप ही सुबाहु और उसके घुड़सवारों के भालों से, तीरन्दाजों के



बाणों से मारे जाने लगे। जो कोई उनसे बचकर आता उनका काम तमाम चन्द्रवर्मा और धीरमल्ल कर रहे थे। भयङ्कर युद्ध हो रहा था।

इस प्रकार जब युद्ध कुछ देर तक चलता रहा, तो शत्रु सैनिकों के साथ चन्द्रवर्मा के कुछ सैनिक भी मारे गये। शत्रु असख्य थे और उनके सैनिक बहुत कम थे। सर्पकेतु ने अगर थोड़ी और सेना घाटी में भेजी, तो धीरमल्ल और चन्द्रवर्मा ने अनुमान किया कि उन पर आपत्ति आ सकती थी।

वे अभी सोच रहे थे कि क्या किया जाय। उनको सर्पकेतु का कर्कश स्वर घाटी के द्वार पर सुनाई दिया-" जो कोई चन्द्रवर्मा और धीरमल्ल का सिर काटकर लायेगा, उसको लाख मुहरें ईनाम दूँगा। इस प्रान्त का उसे सामन्त बना दूँगा। आगे बढ़ो।" सर्पकेतु इस तरह वह अपने सैनिकों को तरह तरह से जोश दिला रहा था।

पलक मारते ही घाटी का द्वार भयङ्कर युद्ध भूमि में परिवर्तित हो गया। सर्पकेतु द्वारा घोषित ईनाम पाने के लिए शत्रु





सैनिक, एक दूसरे को धक्का देते घाटी में घुसने के लिए होड़ करने लगे। सुबाहु के सैनिकों की मदद के लिए चन्द्रवर्मा ने थोड़ी और सेना भेजी, परन्तु सर्पकेतु के सैनिक, अपने मृत.... या मरते सैनिकों पर घोड़ा दौड़ाते, धीमे धीमे आगे बढ़ते आ रहे थे। धीरमल्ल और चन्द्रवर्मा ताड़ गये कि उनके लिए परिस्थिति कुछ उलझने लगी थी।

यकायक चन्द्रवर्मा ने अपना घोड़ा धीरमल्ल की ओर बढ़ाया- "धीरमल्ल! मुझे एक उपाय सूझ रहा है। हम थोड़ी सेना लेकर उन पत्थरों पर से चढ़कर, पहाड़ पार करके सर्पकेतु पर पीछे से हमला करें तो अच्छा होगा। अगर परली तरफ न उतरा जा सका, तो हम पत्थरों के पीछे से ही शत्रु पर वाण और भाले फेंक सकते हैं। उस हालत में सर्पकेतु अवश्य घाटी के द्वार से अपनी कुछ सेना को हटाकर रहेगा।"

"हाँ, महाराज! हमें इन परिस्थितियों में कुछ न कुछ करना होगा। शत्रु सेना अगर सारी की सारी घाटी में आ गई, तो हमें भागने का भी मौका न मिलेगा।" सेनापति धीरमल्ल ने कहा।

चन्द्रवर्मा कुछ तीरन्दाजों को साथ लेकर, बड़े बड़े पत्थरों पर से रेङ्गता रेङ्गता ऊपर चढ़ा। घाटी के सामनेवाले मैदान की तरफ उसने देखा। उसके सामने जो दृश्य था, वह बड़े से बड़े बहादुरों को भी डरपोक बना सकता था। सैकड़ों की संख्या में घुड़सवार, और हजारों सिपाही घाटी के द्वार पर आ रहे थे। इतनी बड़ी सेना के साथ युद्ध करके कैसे उसे पराजित किया जा सकता था? चन्द्रवर्मा ने सोचा।

ज्यादह से ज्यादह यही हो सकता था कि वह, धीरमल्ल और सुबाहु और बूढ़े का लड़का, देवल, शत्रुओं के हाथ में पड़े बगैर भाग सकते थे। इसके बाद फिर जङ्गलों में दर दर भटकने की नौबत आयेगी, चन्द्रवर्मा सोचता जा रहा था।

चन्द्रवर्मा, मन में यह सोचता शत्रु सेना की ओर देख रहा था कि उसके मन में एक बात कौंधी। वह बहुत धैर्य के साथ एक पत्थर पर इस प्रकार खड़ा हो गया, जिससे कि शत्रु उसे आसानी से देख सके, कठिन स्वर में उनको सम्बोधित करके वह यह कहने लगा-

"सैनिको, में वीरपुर के सामन्त, सूर्यवर्मा का लड़का हूँ। मेरा नाम चन्द्रवर्मा है। तुम सब जानते ही हो कि सर्पकेतु ने कैसे राजवंश का क्रूरता से निर्मूलन किया, और कैसे वह स्वयं राजगद्दी पर बैठा। मैं महिष्मती राजा के सिंहासन पर राजा यशोवर्धन के लड़कों में से बचे हुये तपोवर्धन को बिठाना चाहता हूँ। अगर वे इसके लिये न मानें तो जिसे आप चाहेंगे, उसे गद्दी पर बिठायेंगे। दुष्ट, कपटी, क्रूर, सर्पकेतु को पहले मारना होगा।



अगर हमारे वीरपुर के सैनिक आप में हों, तो मैं यह काम उनको सौंपता हूँ। वे सामने आयें और यह कार्य पूरा करें।"

चन्द्रवर्मा की आवाज सुनकर सब अवाक रह गये। उसने कहना खतम किया था कि सेना के एक भाग में जय जयकार होने लगा- "वीरपुर महाराजा की जय, जय !" तुरन्त सेना में, धकम पेल, पकड़-धकड़ शुरू हो गयी।

देखते-देखते, सेना का एक बड़ा भाग चन्द्रवर्मा की ओर आने लगा। फिर तुरन्त "सर्पकेतु महाराज की जय" का निनाद

भी सुनाई पड़ा। चन्द्रवर्मा की ओर आनेवाले घुड़सवार पीछे मुड़कर जोर से गरजते हुए उनकी ओर तुरन्त लपके।

चन्द्रवर्मा ने पीछे मुड़कर घाटी में खड़े सेनापति धीरमल्ल से कहा- "धीरमल्ल! यह ही अच्छा मौका है। सर्पकेतु की सेना का बहुत बड़ा भाग हमारी तरफ आ गया है। वे बाकी सेना से लड़ रहे हैं। यदि तुम अपने सैनिकों को लेकर घाटी के द्वार पर हमला करके मैदान में आ सके तो सर्पकेतु का जल्दी सर्वनाश किया जा सकता है।"

सेनापति धीरमल्ल के अपने सैनिकों को सावधान करने से पहले ही सर्पकेतु जान गया कि उस पर आपत्ति आनेवाली थी। अपने सैनिकों को शत्रु पक्ष की ओर जाता देख, और उस पर हमला करता देख सर्पकेतु ने अपने सैनिकों को पीछे घाटी के द्वार पर बुलाया। विश्वासपात्र सैनिकों को लेकर वह भागने लगा।

चन्द्रवर्मा और धीरमल्ल अपनी सेना इकट्ठी करके, भागती सर्पकेतु की लेना का पीछे करने लगे।

तङ्ग घाटियों में से, बड़े बड़े पत्थरों से बचते, गढ़ों से बचते, चन्द्रवर्मा ने सर्पकेतु के सैनिकों को खदेड़ा। शत्रु सेना के कुछ घुड़सवार और सिपाही उसने कैदी बनाये। परन्तु सर्पकेतु, चन्द्रवर्मा के हाथ न आया। वह काफी सेना के साथ पहाड़ों में और बहुत दूर भाग गया। तब तक चन्द्रवर्मा के सैनिक बहुत थक गये थे। सेनापति धीरमल्ल, सुबाहु, और चन्द्रवर्मा ने आपस में सलाह मशवरा करके सर्पकेतु का ठिकाना मालूम करने के लिये अपने दस सैनिकों को भेजा।

(अगले अङ्क में समाप्त)





सन्देह



विक्रमार्क फिर पेड़ के पास गया। पेड़ से शव उतारकर, कन्धे पर डाल चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा-"राजा! हमारी दोस्ती बहुत दिनों से चल रही है, तेरे लिए मैं बड़ा हूँ या श्मशान का भिखारी बैरागी? इस बारे में तुम्हें सोचना होगा, इस प्रकार के सन्देह कभी न कभी, किसी को कहीं न कहीं होते ही हैं। विन्ध्य देश के सेनापति की लड़की, रत्नावली के सन्देह के बारे में बताता हूँ। सुनकर तुम अपनी थकान भुला देना।" उसने यों कहना शुरु किया।

विन्ध्य देश के राजा के यहाँ श्रीमन्त नाम का एक सेनापति रहा करता था। उस देश के एक प्रान्त में चोरी-डकैतियाँ



लगातार होती आ रही थीं। श्रीमन्त ने अपनी सेना लेकर उस प्रदेश पर कई बार हमला किया। परन्तु एक बार भी चोर न मिले। चोर और उनका चोरी किया हुआ माल गायब होता रहता। जिनके घर चोरी होती थी, वे भी कभी एक चोर को न पकड़ पाये थे। चोरी का माल भी कभी किसी को न मिला।

यह श्रीमन्त के लिए बड़ी उलझी समस्या बन गई। वह दिन रात इस समस्या को सुलझाने में लगा था कि उसके सामने एक और समस्या आ पड़ी।

यह समस्या अपनी लड़की रत्नावली के विवाह की समस्या थी। रत्नावली बहुत सुन्दर थी। बुद्धिमान भी थी। इसलिए उससे विवाह करने के लिए कई युवक, जिनमें कई राजवंश से भी सम्बन्धित थे, आये। इन युवकों में राजसिंह नाम का एक युवक था।

परन्तु राजसिंह रत्नावली से विवाह करने के लिए न आया था। वह सेनापति के पास कुछ और सहायता माँगने आया था। उसका किला उस इलाके में था, जहाँ चोरों का उपद्रव था। यद्यपि चोरों ने अभी तक उस पर हमला न किया था, तो भी वह उनको जैसे भी हो पकड़कर सज़ा देना चाहता था, क्योंकि उस इलाके का वह ही मुखिया था।

"सेनापति जी, अगर आपने मुझे कुछ सेना दी, तो उसका भरण पोषण मैं अपने खर्च पर करूँगा। मैं अपने प्रान्त में वहाँ के लोगों को जमा करके सेना बना सकता हूँ। परन्तु वे बहुत गँवार लोग हैं। यह ही नहीं वहाँ किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। आपकी सेना मेरे किले की ही रक्षा न करेगी, बल्कि चोरों का

पता लगने पर उनका पीछा करेगी। मुकाबला करेगी। मैं स्वयं चोरों से कई बार लड़ा हूँ। करीब करीब मैंने उनको पकड़ भी लिया था। परन्तु मेरे साथ आये हुये लोग ठीक समय पर भाग गये। मैं मुश्किल से चोरों के हाथों में पड़ने से बचा। अगर आपने मेरी मदद की तो आपकी समस्या भी हल हो जायेगी।" राजसिंह ने सेनापति से कहा।

सेनापति अभी कुछ भी निश्चय न कर पाया था कि राजसिंह ने रत्नावली को देखा। उसने रत्नावली से विवाह करने के लिए कहा। उसने अपनी इस इच्छा के बारे में भी सेनापति से कहा।

सेनापति को भी राजसिंह भाया। वह सुन्दर नवयुवक था। अच्छा वंश था उसका। वह उस प्रान्त में था, जहाँ चोरों ने ऊधम मचा रखा था। उस प्रान्त में अपने एक बलवान सम्बन्धी का होना उसने भी आवश्यक समझा। अगर यह दामाद बन गया, तो उसके साथ कुछ सेना भेजने में सङ्कोच करने की कोई जरूरत न थी। यह सब सोचकर श्रीमन्त ने रत्नावली का राजसिंह के साथ विवाह करने का निश्चय किया।



उसको एक ही बात बीन्ध रही थी, वह यह कि जब लड़की को जाना ही था, तो क्या ऐसी जगह जाना था? फिर भी उसने सोचा कि चोरों का उपद्रव जल्दी ही समाप्त हो जायेगा और तब तक वह अपनी लड़की को अपने यहाँ ही रखेगा।

रत्नावली और राजसिंह का विवाह बड़े धूमधाम से हुआ। ससुर की सेना के साथ राजसिंह जब निकला तो उसके साथ रत्नावली भी निकली।

"बेटी, शादी के होते ही क्या हमें छोड़कर चली जाओगी? क्यों नहीं कुछ

दिन यहीं रहती हो? जब जाना चाहोगी तभी तुम्हारा पति आकर तुम्हें लिवा ले जायेगा। उस प्रान्त में इस समय बड़ी अराजकता फैली हुई है।" श्रीमन्त ने अपनी लड़की से कहा।

"एक से शादी करने के बाद मायके में ही रहना स्त्री का धर्म नहीं है। पिताजी, जब कभी में आपको देखना चाहूंगी, तभी मैं चली आऊँगी। जब मेरे पति हैं, तो मुझे चोरों से क्या डर?" रत्नावली ने पिता से कहा। वह अपने पति के साथ चली गई।

जब से यह ससुराल आई, रत्नावली को शान्ति न थी। हर किसी के मुँह से वह चोरों के हथकण्डों के बारे में सुनती। डकैतियों और हत्याओं की सीमा न थी। वह जिस किले में थी, वह बहुत बड़ा था। उसमें दिन में सैकड़ों नौकर रहते थे।

पर रात होते ही सारी जगह सुनसान सी मालम होती। यही नहीं रात के समय ही राजसिंह चोरों को पकड़ने चला जाता। अगर कहीं कोई आहट होती तो रत्नावली चौक उठती और सो नहीं पाती।



चोरों का एक सरदार था। उसके कारनामों के बारे में रत्नावली ने कई ऐसी कहानियाँ सुनीं, जिन पर विश्वास नहीं किया जा सकता था। उसका पति उसे ही पकड़ने का प्रयत्न कर रहा था। वहीं ऐसा न हो कि आधी रात के समय उसका पति उसके हाथ पकड़ लिया जाय, इसलिए वह लाखों देवताओं से प्रार्थना करती कि वे उसके पति की रक्षा करें।

राजसिंह ने सेना लाकर अपने किले में रखी थी, पर चोरों का उपद्रव कम न हुआ। अगर वे किले पर हमला करते तो न मालूम क्या होता, पर वे उस तरफ आये ही नहीं। धीमे धीमे रत्नावली का भय कम हो गया।

एक साल बीत गया। रत्नावली के एक लड़का हुआ। उस लड़के के लिए एक दाई रखी गई। यह दाई रत्नावली के साथ ही आई थी। एक दिन दाई रत्नावली के कमरे में घबराई हुई आई-" हमें एक क्षण यहाँ नहीं रहना चाहिये। चलिये चलें! चोर और कोई नहीं हैं, हमारे किले में काम करनेवाले ही चोर हैं। उनके सरदार भी हमारे मालिक हैं। मैंने उनको अपनी आँखों से देखा है।"





यह सुन रत्नावली चकरा गई। पर कुछ सोचने पर उसे लगा कि उसका कहना ठीक हो सकता था। यही कारण है कि कभी चोरों ने किले पर हमला न किया था। इसीलिए ही यद्यपि उसका पति चोरों के सरदार का पीछा कर रहा था, तो भी उस पर कभी कोई आपत्ति न आई थी। मेरा पति एक बड़ा नाटक खेल रहा है। मेरे पिता की आँखों में धूल झोंकने के लिए ही मुझे यहाँ लाया है। सेना किले में है, और बाहर चोरियाँ हो रही हैं। जो चोरों को पकड़ने निकले थे, वे ही चोरी करवा रहे थे।

पर राजसिंह उसको कितना ही चाहता था। वह एक हत्यारा भी हो सकता था, यह वह विश्वास न कर सकी, जबतक स्वयं आँखों न देख लिया जाय, तबतक उसने विश्वास न करने की सोची।

एक दिन रात को राजसिंह जब बाहर जा रहा था, तो रत्नावली ने रोका। आधी रात के समय बिस्तर घर से बिना आहट के वह उठा और पत्नी को सोता देख, वह बाहर चला गया।

परन्तु रत्नावली ने तो यूँ ही आँखें मूँद रखी थीं। वह सचमुच सो नहीं रही थी। पति के जाते ही, वह भी एक काली ओढ़नी ओढ़कर बाहर चली गई। उसने देखा कि सफेद पोषाक पहने उसका पति, किले से दूर इमली के पेड़ के पास गया, और वहाँ से अदृश्य हो गया।

इमली के पेड़ों के पास एक बावड़ी थी। रत्नावली ने उस बावड़ी में देखा। परन्तु वहाँ सब अन्धकार था। फिर भी उसका पति उस बावड़ी में ही गया होगा, इसलिए रत्नावली भी बावड़ी में उतरी। बावड़ी के पास दीवारों से सटे कुछ पौधे थे। उन पौधों के पीछे उसे किसी की

अस्पष्ट बातें सुनाई पड़ीं। जब वह उन पौधों के पास गई तो उसके पीछे एक छोटा-सा द्वार दिखाई दिया। उसके पीछे एक दुमञ्जला मकान दिखाई दिया। वहाँ लोग थे। उनमें राजसिंह भी था। उसके चारों ओर उसके नौकर ही थे। परन्तु वे अपने मालिक से तब विनयपूर्वक बातें न करके बडे तीखे ढङ्ग से पेश आ रहे थे। बेअदबी दिखा रहे थे।

"मैं तुम्हारा सरदार हूँ। अगर किसी ने मेरा हुक्म न माना तो मैं उसे मार दूँगा।" राजसिंह गरज रहा था।

"हमें आपके नेतृत्व में विश्वास नहीं है। हमें तो ऐसा लगता है कि आप हमें सेना को सौंप देंगे। हम एक और सरदार को चुन लेंगे।" एक ने कहा। वह किले का धोबी था।

राजसिंह ने धोबी पर तलवार निकाली। ठीक उस समय उसकी छाती पर दो तीन भाले सामने रखे गये, रत्नावली यह देख बेहोश हो गयी।

जब होश आया तो वह अपने कमरे में थी। राजसिंह समीप ही था। अपने पति को जीवित पा, उसने सन्तोष से निश्वास



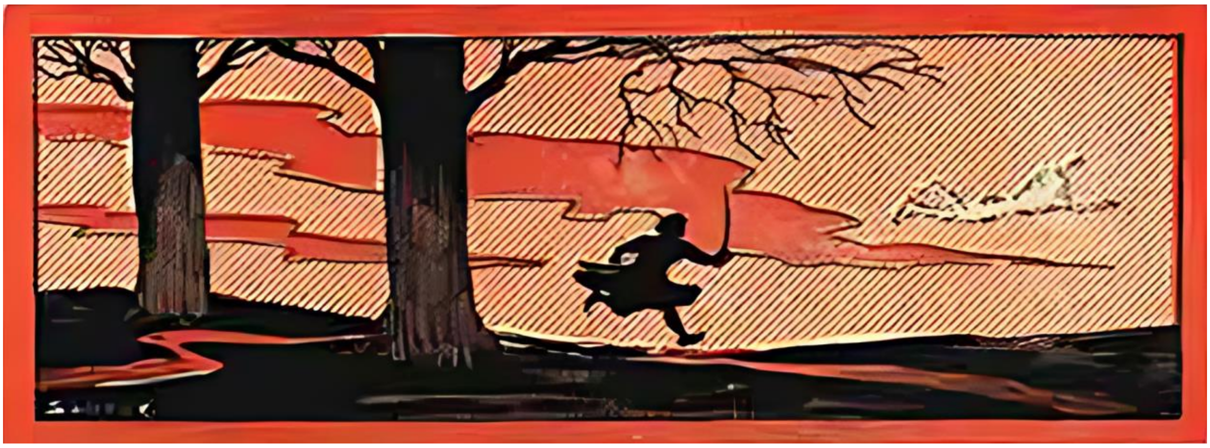
छोड़ा। उसने अपनी पत्नी से कहा-"तुम्हारा स्वास्थ्य बिलकुल बिगड़ गया है, मैं कल ही तुम्हें तुम्हारे मायके भेज दूँगा। तुम और बेटा कुछ दिन वहीं रहेंगे।"

अगले दिन, रत्नावली, सैनिकों को लेकर लड़के के साथ मायके गई। रास्ते में उसे एक सन्देह हुआ। वह यह कि पिता से अपने पति के बारे में सच सच कहे कि नहीं।

बेताल ने कहानी सुनाकर पूछा-"राजा, जो सन्देह रत्रावली को हुआ था, वह मुझे भी हो रहा है, वह अपने पिता की आज्ञाकारिणी होकर, प्रजा शत्रु पति के बारे में बताये या पति की आज्ञाकारिणी होकर पिता को उसका रहस्य न बताये? या जिस उद्देश्य से उसने उसका विवाह राजसिंह से किया था, वह उद्देश्य नष्ट करे? अगर जान बूझकर तुमने इन प्रश्नों का उत्तर न दिया तो तुम्हारा सिर टूट जायेगा।

विक्रमार्क ने कहा-"बड़ों का कहना है, कि स्त्री को विवाह से पहले पिता की आज्ञा माननी चाहिये और विवाह के बाद पति की। चोरों को पकड़ने की जिम्मेवारी सेनापति की थी, उसकी लड़की की नहीं। राजसिंह को जब मालूम भी हो गया कि उसका भेद उसकी पत्नी ने जान लिया था, तो भी उसने पत्नी को अपने पिता के पास भेज कर यह दिखाया कि उसको उस पर पूरा विश्वास था। इसलिये यह जरूरी नहीं है कि रत्नावली अपने पिता से पति के रहस्य के बारे में कहे।"

राजा का मौन इस प्रकार भङ्ग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।



शेखीखोर शेर

एक दिन शेर को अपना प्रताप दिखाने की सूझी। जङ्गल में घूमते-घूमते उसको एक बाघ दिखाई दिया। उसने उससे कहा-"सुनता हूँ, आजकल तुम्हारा सिर बहुत चढ़ा हुआ है। जानते हो इस जङ्गल का राजा कौन है?"

"आप ही हैं....।" बाघ ने कहा।

थोड़ी देर बाद शेर को एक गोरिल्ला दिखाई दिया।

"जानते हो, इस जङ्गल का राजा कौन है?" शेर ने उससे पूछा।

"आप ही हैं, हुजूर।" गोरिल्ला ने कहा।

थोड़ी देर बाद, शेर को एक हाथी दिखाई दिया। शेर ने उसके सामने आकर कहा-"अबे, काले कलूटे। जानते हो इस जङ्गल का राजा कौन है?" शेर ने पूछा।

हाथी ने शेर को सूँड़ में रखकर, दूर झाड़ियों में फेंक दिया। शेर ने शरीर झाड़ते हुए कहा-"इतने गुस्से की क्या जरूरत है? अगर नहीं जानते हो, तो कहते क्यों नहीं हो कि मालूम नहीं है?" शेर ने कहा।





एक गाँव में एक किसान रहा करता था। उसका एक लड़का था। वह तो इतना समझदार न था, पर बहू बहुत अक्लमन्द थी। एक दिन सवेरे किसान का लड़का घर के बाहर बैठा, कुल्हाड़ी की मूठ बना रहा था कि तीन आदमियों ने आकर कहा-"तुम्हें हमारे राजा एक बार बुला रहे हैं, हमारा राजा समुद्र का राजा है।"

समुद्र का राजा देवताओं की जाति का था। मगर वे मनुष्य, काले और बदसूरत थे। वे वस्तुतः राक्षसों के राजा के दूत थे, यह वह किसान का लड़का न जान सका।

"तुम्हारे राजा को मुझ से क्या काम है?" उसने पूछा।

"इस देश में सुनते हैं, तुम सा अक्लमन्द नहीं है, एक ऐसे काम को, जो हमारे देश में कोई नहीं कर पाया है, हमारे राजा तुम्हारे द्वारा करवाना चाहते हैं, इसीलिये ही तुम्हें बुलवाया है।" उन्होंने कहा।

"अक्लमन्दी के लिये मैं नहीं मशहूर हूँ मेरे पिता है। चाहो तो उनको ले जाओ। वे अब खेत गये हैं। अन्धेरा होने से पहले नहीं आयेंगे।" किसान के लड़के ने कहा।

"यह बात है, तो तुम और वह भी आये, हम फिर तुम्हारे लिये नहीं आयेंगे। हमारी नाव बन्दरगाह पर है। अगर कल तुम बन्दरगाह आये तो हम तुम्हें ले जायेंगे।" यह कह वे चले गये।

पिता के घर आते ही लड़के ने कहा-"पिताजी, समुद्र के राजा ने हमारे लिये आदमी और नाव भेजी है, सुना है, उन्हें हमसे कोई काम है। अगर हमने उनका काम कर दिया, तो हमें बहुत-सा ईनाम देंगे।"

"क्या वे राजा की तरफ से कोई निशानियाँ लाये?" किसान ने पूछा।

"नहीं लाये। वे फिर नहीं आयेंगे। उन्होंने कहा है कि कल सवेरे तक यदि हम बन्दरगाह पहुँच गये तो वे अपने देश ले जायेंगे।" किसान के लड़के ने कहा।

"बन्दरगाह? और वहाँ तक मैं पैदल जाऊँ? यह मुझ से नहीं हो सकता। दूर है। अगर दूरी कम कर सको तो मैं चलूँगा।" यह कह, वह सो गया।

किसान के लड़के ने अपनी पत्नी से समुद्र के राजा के निमन्त्रण के बारे में कहा। और यह भी बताया कि पिताजी तब तक न आयेंगे जब तक बन्दरगाह की दूरी कम नहीं हो जाती। क्या यह काम सम्भव है?

उसकी पत्नी ने कहा-"रास्ता कम करने का एक ही तरीका है। जब तक चलो, कहानी सुनाते जाओ। इस तरह अपने पिता को साथ ले जाओ।"

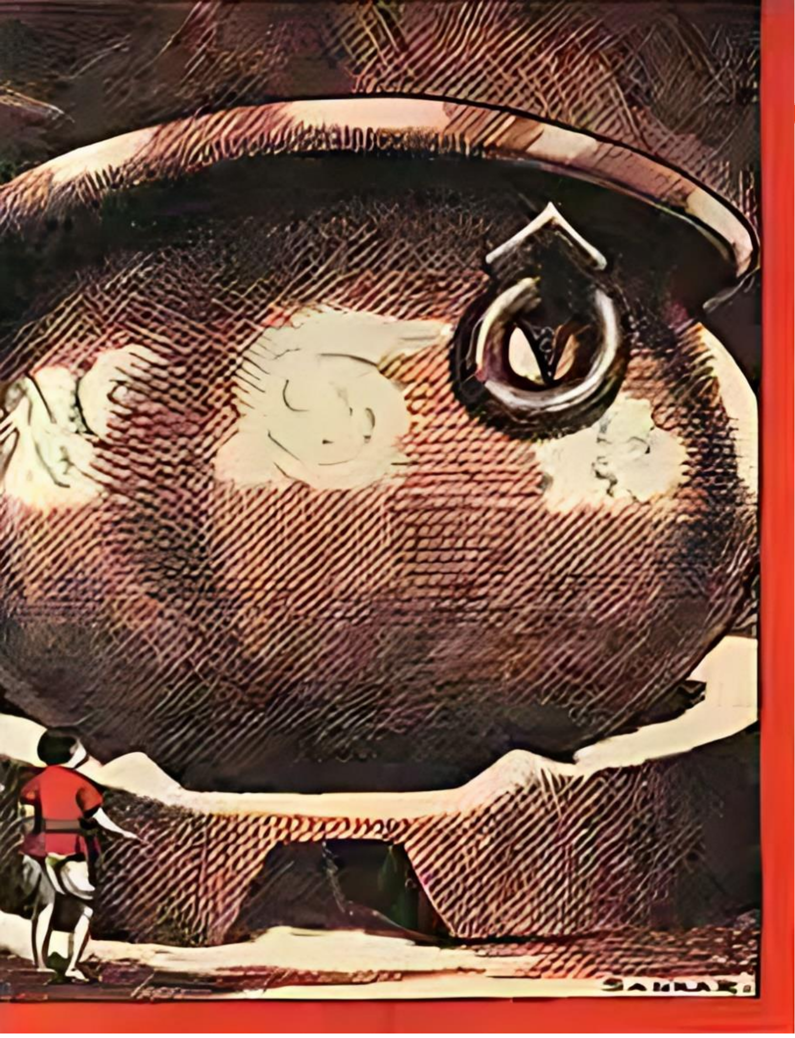
किसान का लड़का पत्नी की सूझबूझ पर बहुत खुश हुआ। उसने बहुत सवेरे पिता को उठाकर कहा-"पिताजी उठिये, कहा था न कि रास्ता कम कर दिया तो चलेंगे। आइये, कम कर दूँगा।"



किसान और उसका लड़का बन्दरगाह की ओर चले। रास्ते भर लड़का, पिता को कोई न कोई कहानी सुनाता रहा। आखिर वे बन्दरगाह पहुँचे, वहाँ एक टूटी फूटी नौका और तीन आदमी थे।

"यह क्या नाव है? यह तो राक्षसों की नाव मालूम होती है?" किसान ने कहा।

काले आदमियों ने उससे कहा-"हमारे राजा के पास जितनी नावे हैं, उनमें यह सब से अधिक तेज चलती है। इसीलिए ही इसे भेजा है।"



किसान और उसका लड़का उसमें जाकर बैठ गये। काले आदमी चप्पू चलाने लगे। वह मामूली नौका की तरह ही चली। कुछ देर बाद वह एक द्वीप में पहुँची। उस द्वीप में कहीं एक पौधा, या पेड़ नहीं था। वह राक्षसों का द्वीप था। यह किसान और उसके लड़के को मालूम हो गया। पर क्या करते!

काले आदमियों ने पिता पुत्र को उतारा, और उनको राजा के पास ले गये। राक्षसों का राजा और भी काला, और बदसूरत था।

"आपने हमें इतनी दूर क्यों बुलाया है?" किसान ने राक्षसों के राजा से पूछा।

"और कुछ नहीं। हमारे पास एक बहुत बड़ा बर्तन है। हमारे आदमी उसके नीचे आग नहीं सुलगा पा रहे हैं। अगर तुम दोनों ने उसके नीचे आग जला दी तो कोई बात नहीं। नहीं तो जीते जी तुम्हें यहां से जाने नहीं देंगे।" राक्षसों के राजा ने कहा।

"पहले हमें बर्तन दिखाइये, फिर बाद को देखा जायेगा।" किसान ने कहा।

राक्षस उनको एक बड़े कमरे में ले गये। कमरे के बीच में एक बहुत बड़ा ताम्बे का बर्तन था। किसान ने राक्षसों को बाहर भेजकर अन्दर से कुण्डा लगा लिया। फिर पिता पुत्र ने उस बर्तन का चक्कर काटा।

किसान ने अपने लड़के से कहा- "क्या तुम इस बर्तन के बारे में जानते हो?" यह अक्षय पात्र है। हमारे देश के राजा के परदादे, रोज इसमें चावल पकवाकर जो कोई माँगता उसको दिलवाते। ये राक्षस उसे चुराकर यहाँ ले आये हैं।"

"अब हम इन राक्षसों के चंगुल से बाहर कैसे निकले?" लड़के ने पूछा।

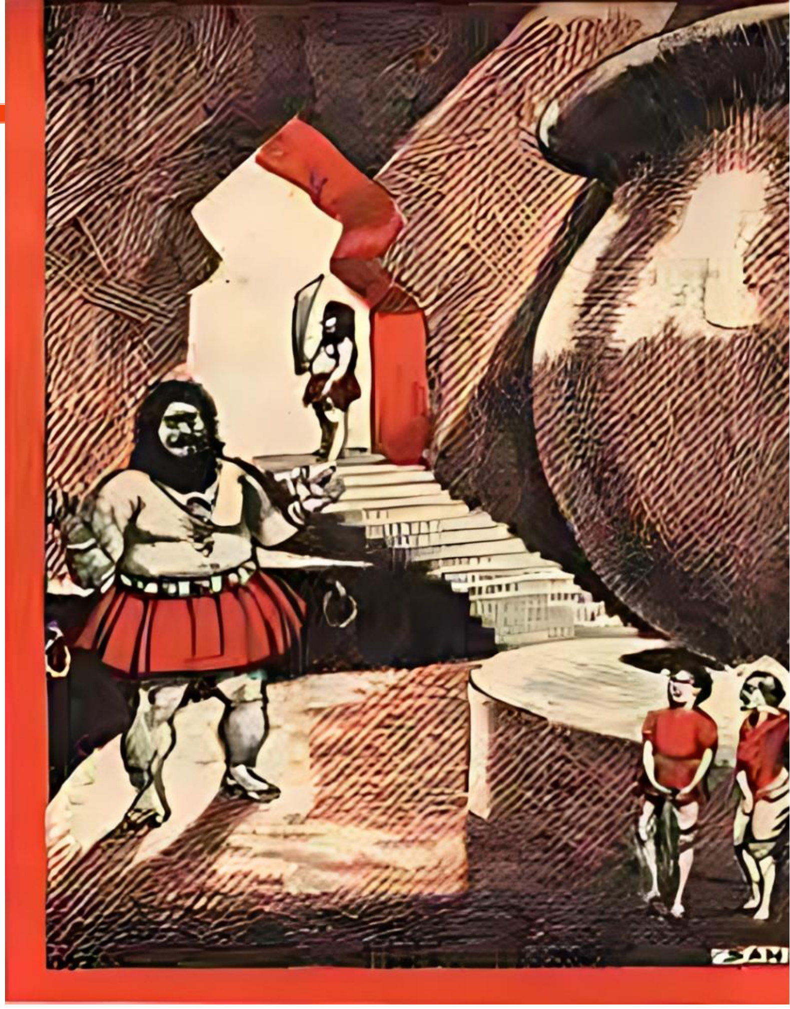
"इसका तरीका में ढूँढ़ निकालूँगा।" कहकर किसान ने किवाड़ खोले, राक्षसों को बुलाया।

उन्होंने आकर पूछा-"क्या आग सुलगा दी है?"

"आग सुलगा देंगे, क्या हवा फेंकने से आग जलती है। जामुन की लकड़ी, आम की लकड़ी, इमली की लकड़ी, पीपल की लकड़ी, बढ़ की लकड़ी, बेल की लकड़ी आदि, नौ लकड़ियाँ लाओ। रूई, चकमक पत्थर और लोहे का टुकड़ा लाओ। अभी जलाये देते हैं आग।"

राक्षसों ने जाकर अपने राजा के पास किसान की बात कही। "क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई है? हमारे द्वीप में तो घास भी नहीं उगती। पेड़ तो हैं ही नहीं, फिर इतनी सारी लकड़ियाँ हमें कहाँ मिलेंगी?" राजा ने कहा।

"अगर आपके देश में नहीं हैं तो हमारे देश में हैं। अपने आदमियों से कहिये कि हमारी बहू से माँगकर ले आयें। अगर आप अपने आदमियों



के साथ अपने दो लड़के नहीं भेजेंगे तो वह विश्वास नहीं करेगी।" किसान ने कहा।

"जब तक वे लकड़ियाँ नहीं ले आते हैं, तब तक इसी कमरे में रहो।" कहकर राक्षसों के राजा ने उन दोनों को वर्तनवाले कमरे में बन्द कर दिया। और अपने लड़के और नाव चलानेवालों को किसान के देश भेज दिया।

राक्षस के लड़कों ने किसान के घर पहुँच कर उसकी बहू से कहा-"हम राक्षस राजा के लड़के हैं। तुम्हारे ससुर और पति हमारे देश में हैं, तुमसे जामुन की लकड़ी, आम

की लकड़ी, इमली की लकड़ी, पीपल की लकड़ी, बढ़ की लकड़ी, बेल की लकड़ी आदि, रूई, आग जलानेवाले पत्थर और लोहे का टुकड़ा माँग कर लाने के लिए कहा है।"

तुरत बहू जान गई कि बहुत बड़ा धोखा दिया गया है। उसने राक्षस के राजा के लड़कों से कहा-"जो कुछ तुम्हें चाहिये वह उस काली कोठरी में है। उन्हें ले जाओ।"

वे काली कोठरी में घुसे। तुरन्त किसान की बहू ने किवाड़ बन्द कर दिये। और ताला लगा दिया। उसने बाहर आकर और राक्षसों से कहा-"तुम्हारे राजा के दोनों लड़के हमारी काली कोठरी में है। बहुत ढूँढा, पर कहीं उस कमरे की चाबी नहीं मिल रही है। जब तक हमारे घर के आदमी चाबी न देंगे तब तक किवाड़ नहीं खुल सकते.... यह जाकर अपने राजा से कहो।"

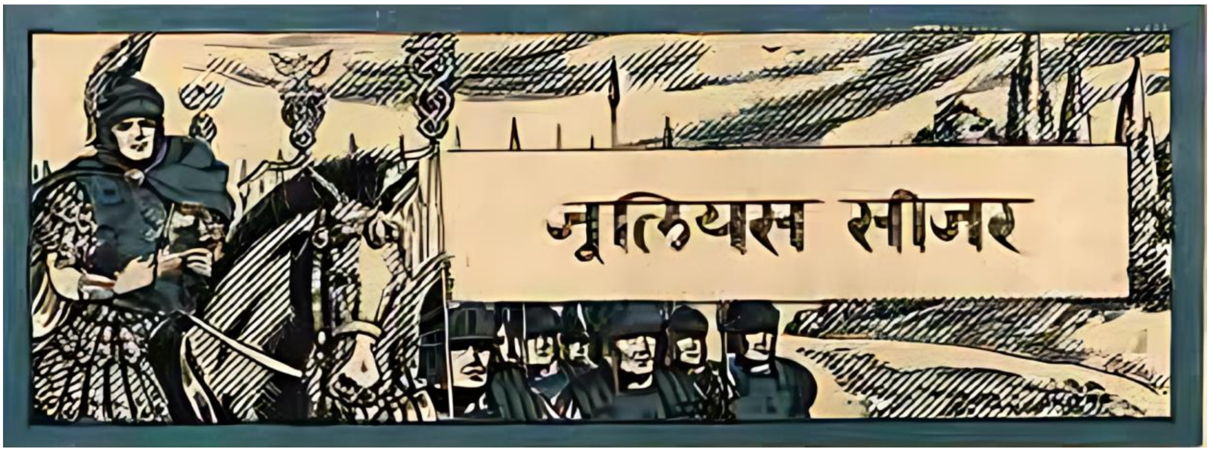
राक्षस नाव में अपने द्वीप गये। जो कुछ किसान की बहू ने बताया था, राजा को बताया।

राक्षसों का राजा आपे से बाहर हो गया। कौवे को भी अपनी सन्तान प्यारी होती है। अपने लड़कों को जल्दी घर बुलाने के लिए उसने किसान और उसके लड़के को छोड़ दिया और उनको घर जाने के लिए कहा।

"हम तुम्हारा काम करके ईनाम पाकर ही जायेंगे, हमें जाने की कोई जल्दी नहीं है।" किसान ने कहा।

राक्षस ने उनको सोने का गोला ईनाम में दिया। उनको एक नाव में घर भेज दिया और उसी नाव में अपने लड़कों को घर वापस बुला लिया। उसके बाद, किसान और उसका लड़का और उसकी पत्नी आराम से रहने लगे।





[जूलियस सीजर का जन्म ईसा से १०० वर्ष पूर्व हुआ। उसने २६ वर्ष की उम्र में अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया। वह रोम के शासक त्रय में था। सीजर रोम के पश्चिमी प्रदेश और गौल का शासक था। पोम्पे मध्य और दक्षिण प्रान्त का शासक था। कासन पूर्वी प्रान्त और फारस का शासक था। सीजर ने अपनी युद्ध कला से रोम के साम्राज्य को दुगना किया। पोम्पे को ईर्ष्या हुई कि सीजर का प्रभाव बढ़ता जा रहा था, इसलिए उसने घोषणा निकलवाई कि सीजर अपनी सेना वापस ले आये। सीजर ने इस घोषणा की परवाह न की, और अपनी सेना को साथ लेकर सीजर ने रोम में प्रवेश किया। पोम्पे डरकर भाग गया। सीजर ने पोम्पे की सेनाओं को नष्ट कर दिया। उसने अफ्रीका और एशिया माइनर में अपने शत्रुओं को पराजित किया। उसे सर्वत्र पूरी विजय प्राप्त हुई।]

रोम नगर में उत्सव मनाये जा रहे थे। जुलियस सीजर युद्ध में विजयी होकर वापस आ रहा था। लोग काम-काज छोड़कर, सड़कों पर आकर, उसकी जय जयकार करने के लिए जमा हो गये।

परन्तु उस नगर में ऐसे भी कई थे, जो जुलियस सीजर के आने पर खुश न थे। क्योंकि रोम नगर में प्रजातन्त्र प्रचलित था उनको भय था कि सीजर, प्रजातन्त्र छोड़कर स्वयं राजा बन जायेगा।

इस तरह चिन्तित व भयभीत लोगों में ऐसे भी बहुत से थे, जिनकी सीजर से नहीं पटती थी। उनमें कासियस नाम का व्यक्ति मुख्य था। इसने पार्कस ब्रूटस से

कहा सीजर के कारण रोम पर आपत्ति आनेवाली थी। ब्रूटस को भी सन्देह था कि सीजर राजा होने का प्रयत्न कर रहा था। किन्तु वह सीजर के निकट मित्रों में था। परन्तु वह देश के हित को सब से ऊँचा और पवित्र माननेवाला देशभक्त था । लोग जितना सीजर का सम्मान करते थे, उतना ही ब्रूटस का भी करते थे।

ब्रूटस बहुत ही भलामानस, निस्वार्थ, और उदार था। इसलिए ही कासियस ने ब्रूटस को अपने पक्ष में करना चाहा। वह अपने इस प्रयत्न में सफल भी हुआ।

सीजर का खातमा करने के लिए एक साजिश की गई। देश के हित का ख्याल करके ही वह उनमें शामिल होने के लिए माना था, वह इन षडयन्त्रकारियों का नेतृत्व करने के लिए भी उद्यत हो गया। इस बीच जूलियस सीजर वैभव के साथ रोम नगर में आया। उसके आगमन के सम्मान में मनोरञ्जन के कार्यक्रम चले, प्रतिद्वन्द्वितायें हुई। जनता खुशियाँ मना रही थी। सीजर के चारों ओर जमा हुए लोगों में से एक चिल्लाया-"सीजर! सावधान। मार्च १५ आ रही है।"

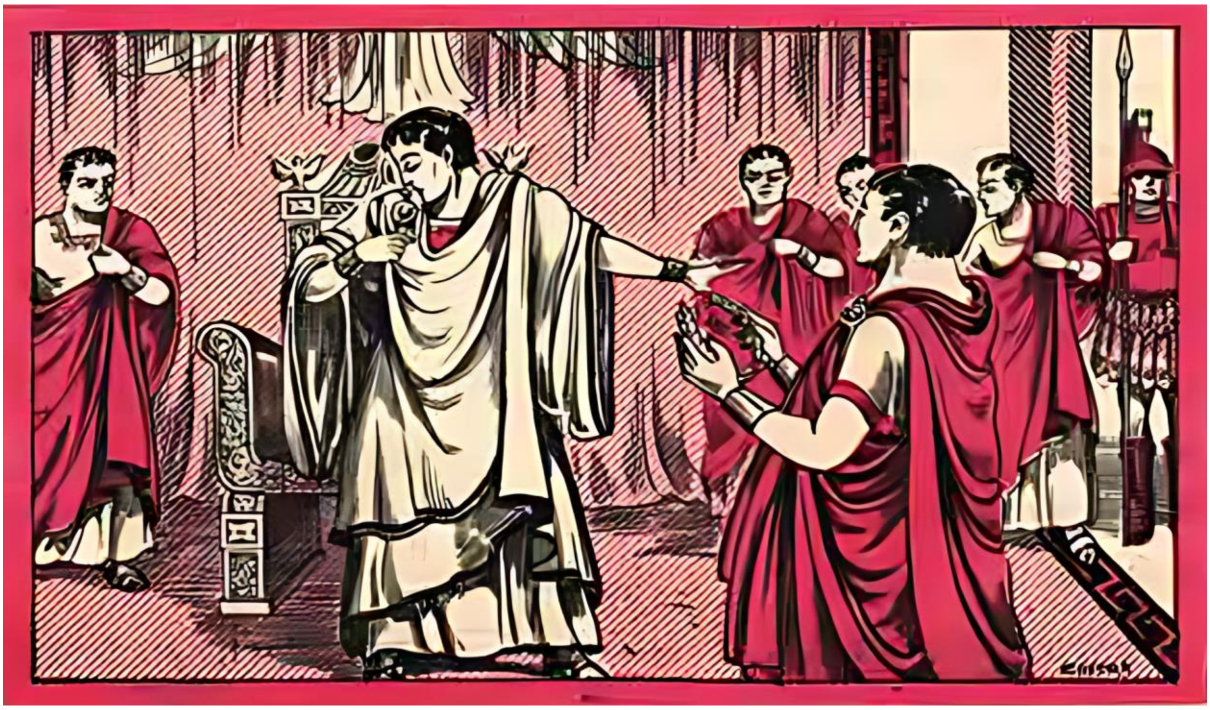


सीजर ने इसकी परवाह न की। उसने कहा-"परवाह नहीं जाने दो।"

व्यायाम आदि जहाँ हो रहे थे वहाँ मार्कस अन्टोनियस नाम के एक अभिमानी व्यक्ति ने उसको राज चिन्ह-सा मुकुट भेंट में दिया। पर सीजर ने उसको स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उसने तीन बार मुकुट दिया, और तीनों बार उसने उसको अस्वीकृत किया। यह देख जनता ने हर्ष ध्वनि की।

एक दिन रात को अन्धेरे में सब षड़यन्त्रकारी ब्रूटस के घर मिले। और उन्होंने खुलेआम सीजर की हत्या करने का निश्चय किया। औरों ने शपथ करने के लिए कहा। पर ब्रूटस इसके लिए न माना-"हम जो करने जा रहे हैं, यह देश के हित के लिए कर रहे हैं। क्या प्रजातन्त्र पर गर्व होना काफी नहीं है? और शपथों की क्या आवश्यकता है? अगर हम बिना शपथों के यह कार्य नहीं कर सकते हैं, तो हमारा यह कार्य न करना ही अच्छा है।" उसने कहा।

"मार्क अन्टोनी को सीजर पर बहुत विश्वास है। सीजर के बाद अगर वह





रहा, तो हमारे लिए बगल में छुरी के बराबर होगा। इसलिए उसको भी मार देना आवश्यक है।" कासियस ने कहा। ब्रूटस इसके लिए नहीं माना।

"यह उचित नहीं है कि हमारा व्यवहार केवल हत्यारों का-सा हो। यद्यपि मार्क अन्टोनी, सीजर का दायाँ हाथ है, तो भी रोम के प्रजातन्त्र को उससे कोई आपत्ति की सम्भावना नहीं है। सीजर जब न होगा, तब वह भी निर्वीर्य और मृतप्राय सा हो जायेगा।" उसने कहा।

सीजर के लिए और कौन मददगार हो सकते थे, यह अनुमान करके, षड्यन्त्रकारी उनसे मिलने गये।

उस दिन सीजर की पत्नी को खराब सपने आये। वह नींद में तीन बार चिल्लाई-"बचाओ! सीजर को मार रहे हैं।" सुबह होने पर उसने अपने पति से कहा-"आज घर से न निकलो। पहले तो सीजर ने उसकी बात न सुनी। आखिर वह पत्नी की बात मान गया। इतने में सीजर को ले जाने के लिए एक षड्यन्त्रकारी आया। सीजर ने उससे कहा-"आज मैं नहीं आऊँगा।"

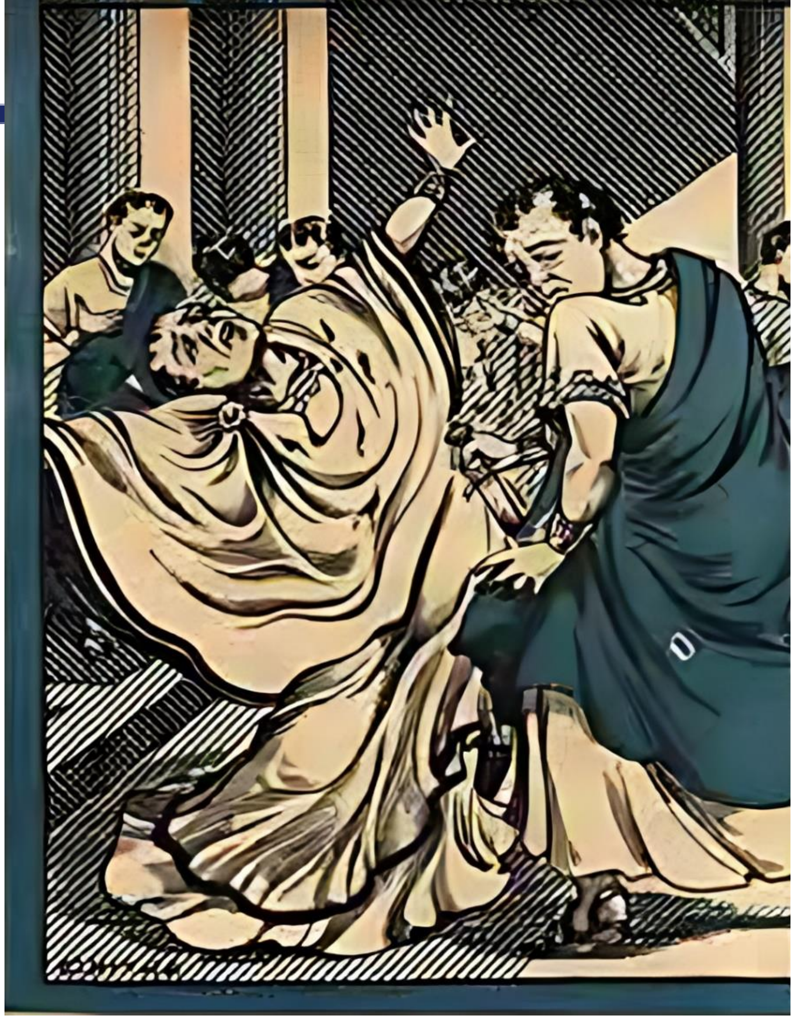
"यह क्या! आज सिनेटर्स ने सीजर को मुकुट देने का निश्चय किया है। अगर आज आप नहीं आयेंगे और अधिवेशन स्थगित कर देंगे तो क्या भरोसा कि वे अपने निश्चय पर रहेंगे! अगर लोगों को मालूम हो गया कि सीजर डर गया है, तो वे क्या सोचेंगे?" इस बीच और षड़यन्त्रकारी सीजर को लिवा लेने आये। सीजर ने अपनी पत्नी से कहा कि वह न डरे और वह उनके साथ चल दिया।

यद्यपि सीजर को मारने का षड्यन्त्र बहुत ही रहस्यपूर्वक चल रहा था, तो भी एक नागरिक को इस बारे में मालूम हो गया। उसने सीजर को एक चिट्ठी लिखी-"तुम्हें ब्रूटस और कासियस आदि मारने जा रहे हैं। खबरदार!" सीजर के रास्ते में वह छुपा रहा। जैसे तैसे उसने चिट्ठी को उसके पास पहुँचा दिया। परन्तु सीजर ने चिट्ठी पढ़ी नहीं।

सीजर के सभा में आते ही उपस्थित प्रजा प्रतिनिधि उसके गौरवार्थ उठकर खड़े हो गये। सीजर जाकर अपने आसन पर बैठ गया, षड़यन्त्रकारी सीजर के चारों ओर इस तरह जमा हो गये जैसे कोई निवेदन पत्र दे रहे हो। एक के बाद एक ने सीजर को अपनी तलवार से मारा आखिरी चोट ब्रूटस की थी।

"अरे, ब्रूटस तुम भी!" कहते हुये सीजर ने प्राण छोड़ दिये।

यह हत्या पलक झपकते ही हो गई। प्रजा प्रतिनिधि आश्चर्य और भय से पथरा से गये। मार्क अन्टोनी जिसने यह सब आँखों देखा था, घर भाग गया। उसने एक आदमी ब्रूटस के पास भेजा। उससे कहला भेजा-



"ब्रूटस का मैं आदर करता हूँ। सीजर के प्रति मुझमें प्रेम था। अगर मुझे यह मालूम हुआ कि सीजर क्यों मारा गया है, मैं तुम्हारे पदचिन्हों पर चलने के लिये तैयार हूँ। अगर ब्रूटस मुझे वचन दे कि मुझे कोई खतरा नहीं हैं तो मैं वहाँ आकर बातचीत करने के लिए तैयार हूँ।"

"मैं भी तुम्हारे मालिक का आदर करता हूँ। उन्हें कोई खतरा नहीं है। उनके सब सन्देहों का निवारण में करूँगा। ब्रूटस ने अन्टोनी के आदमी से कहा।

अन्टोनी सभाभवन में आया। सीजर के शव को देखकर रोया। हत्यारों से उसने कुछ नहीं कहा। उसने कहा-जिन तलवारों से सीजर को मारा गया था, उनसे उसको भी मार दिया जाय।

"हमारे हाथ और तलवारों को देखकर यह न सोचो कि हम हत्यारे हैं। हमारे हृदयों को देखो, जो रोम के लिए छटपटा रहे हैं। लोग सीजर की हत्या के कारण भयभीत हैं। उनको समझाने के बाद मैं तुमको बताऊँगा कि मैंने उसको क्यों मारा।" बूटस ने कहा।

सीजर की मृत्यु के बारे में बोलने के लिए उसका यथोचित संस्कार करवाने के लिए बूटस मान गया । परन्तु ब्रूटस ने शर्त लगाई कि उसके बोलने के बाद ही अन्टोनी बोल सकेग।

ब्रूटस लोगों के सामने गया। "हम जानना चाहते हैं कि सीजर क्यों मारा गया है....!" लोग चिल्ला रहे थे।

"जितना आप सीजर से प्रेम करते थे, उतना में भी प्रेम करता हूँ। परन्तु यदि सीजर जीवित रहता, तो आप सब गुलाम की मौत मरते। आपको क्या यह पसन्द

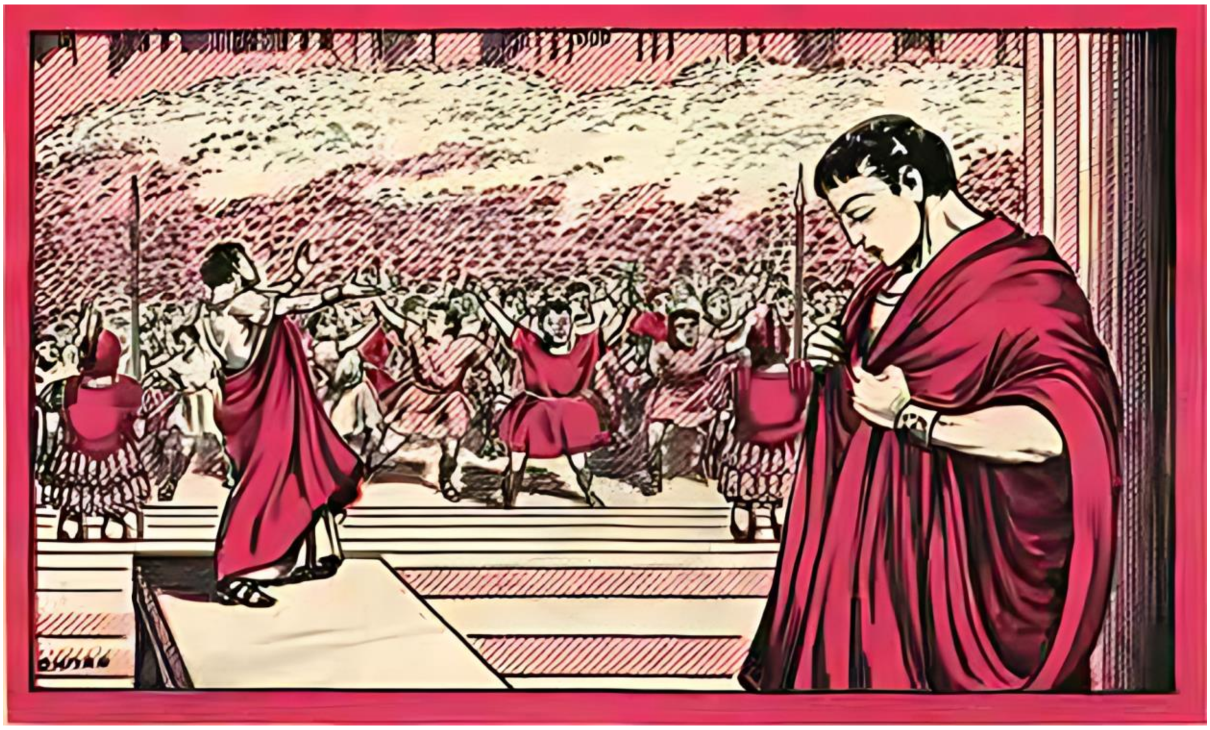


होता या, सीजर की मृत्यु के बाद स्वतन्त्र होकर रहना पसन्द है? अगर मैं सीजर होता तो जो आप सब मेरा करते मैंने बही सीजर के साथ किया। सीजर के अच्छे गुणों की हर कोई प्रशंसा करता है। उसकी महत्त्वाकांक्षायें ही उसकी मृत्यु का कारण बनीं। यदि मेरी मृत्यु से रोम को लाभ पहुँच सकता है तो मैं उसी तलवार से, जिससे सीजर के हत्या की गई है, आत्महत्या करने के लिए तैयार हूँ।"

यह सुन लोग ब्रूटस के पक्ष में हो गये। मञ्च से उतरते हुए ब्रूटस ने कहा-"आप में कोई यहाँ से न जाये। मेरे बाद मार्क अन्टोनी सीजर के बारे में बोलेंगे।"

अन्टोनी में असाधारण वक्तृत्व शक्ति थी। ब्रूटस यह न जान सका कि वह कितनी आसानी से लोगों को उकसा सकता था। अन्टोनी कहता गया कि मैं सीजर की प्रशंसा न करूँगा मगर उसकी प्रशंसा करता गया। कदम कदम पर षड्यन्त्रकारियों को उसने इस तरह बड़ा आदमी कई बार कहा कि लोगों को उनसे घृणा हो गई।

"ब्रूटस कह रहा है कि सीजर लालची था, महत्वाकांक्षी था। ब्रूटस



बड़ा आदमी है। मैंने तीन बार सीजर को मुकुट दिया, पर तीनों बार उसने लेने से इनकार कर दिया। क्या महत्वाकांक्षी इस प्रकार करेगा? कितना बड़ा सीजर किस तरह समाप्त हुआ, यह देख लीजिए। जीवित ब्रूट्स, कासियस जैसे लोगों के साथ क्यों अन्याय किया जाय? मृत सीजर के साथ ही अन्याय किया जाये। आओ, हम अपने साथ ही अन्याय करें।"

मार्क अन्टोनी ने लोगों को भड़का दिया। उसने उनसे सीजर के शव के पास आने के लिए कहा। किस किसने कहाँ कहाँ चोट की थी, उसने बताया। इसके बाद अन्टोनी ने कहा-"यह है सीजर की मृत्यु के समय की घोषणा। यह सुनकर आप रोयेंगे। इसमें सीजर ने लिखा है कि मेरी मृत्यु के बाद रोम के प्रति नागरिक को ७५ सिक्के दिये जायें।"

लोगों का आवेश बढ़ गया। वे षड़यन्त्रकारियों को खोजने निकल पड़े। उनके घरों का जला दिया। पर षड़यन्त्रकारियों को इसकी खबर मिल गई। वे भाग गये।

फिर थोड़े समय बाद सीजर के पक्षवालों और षडयन्त्रकारियों में युद्ध हुआ। सीजर के पक्ष के नेता, अन्टोनी, अक्टेवियस सीजर, लेपाफस आदि थे। दूसरे पक्ष के नेता ब्रूटस और कासियस थे। परन्तु इन दोनों में मैत्री न थी। ब्रूटस जान गया कि वह स्वार्थी था। ब्रूटस ने जब कभी युद्ध खर्च के लिए कासियस से धन माँगा तो उसने हमेशा यही कहा कि उसके पास पैसा न था, यद्यपि उसके पास बहुत धन था।

फिलिपर्क नामक स्थल पर दोनों का युद्ध हुआ। इस युद्ध में षड़यन्त्रकारी हार गये। ब्रूटस और कासियस ने शत्रु के हाथ में न पड़ना चाहा। उन्होंने आत्महत्या कर ली।





चीन देश के एक प्रान्त में कभी अन्टाक नाम का एक बड़ा गरीब आदमी रहा करता था। सिवाय एक अनार के पेड़ के उसके पास कुछ न था। उसको देखने में ही उसका सारा समय चला जाता। जब अनार लगते, तब तो वह दिन रात पेड़ के पास ही बैठकर पहरा देता।

अगर शरारती लड़के, घर के दीवार के पास भी देखते तो वह आग हो जाता, उनको डाँटता डपटता, अगर पकड़ में आते तो उनको पीटता भी, अनार के पेड़ पर उसको इतना अधिकार चलाता देख लोगों ने उसका नाम ही "अनार का राजा" रख दिया।

एक साल बहुत से अनार लगे। जब वे पकने लगे तो अन्टाक चौबीस घण्टे पेड़ के पास ही काट देता। एक दिन रात को उसने नींद रोकने की बहुत कोशिश की, पर वह ऊँघने ही लगा। जब वह उठा तो देखता हैं कि पेड़ पर कुछ फल नहीं है। इसी तरह एक और दिन कुछ और फल गायब हो गये।

तीसरे दिन चोर को पकड़ने के लिये अन्टाक इस तरह बैठ गया जैसे वह सो रहा हो। उसने देखा कि एक लोमड़ी घर की दीवार फान्द कर अन्दर आ रही थी। लोमड़ी अनार के लिये उछल ही रही थीं कि अन्टाक ने उसकी पूँछ पकड़ ली। पर लोमड़ी जैसे तैसे छुड़ाकर भाग गई।

अगले दिन, अन्टाक ने लोमड़ी को पकड़ने का एक और उपाय सोचा। वह जिस जगह दीवार पर से आती थी, वहाँ उसने खूब गोन्द पोत दी। लोमड़ी उस पर कूदी और उस पर चिपक सी गई। और अन्टाक के हाथ आ गई, वह उसे अपनी लाठी से मारने गया।

सुभद्रा देवी

"अगर तुमने मुझे छोड़ दिया तो मैं तुम्हारा उपकार करूँगी। चाहोगे तो मैं राजा की लड़की को ही तुम्हारी पत्नी बना दूँगी।" लोमड़ी ने कहा।

"क्या तुम्हें मुझे देख कर मजाक सूझ रही है? मैं तो इतना गरीब हूँ कि राजा अलग, कोई मामूली आदमी भी अपनी लड़की न देगा।" अन्टाक ने कहा। पर जब लोमड़ी ने बार बार कहा कि वह राजकुमारी के साथ उसकी शादी करेगी तो उसने उसको छोड़ दिया।

लोमड़ी सीधे नदी पार के राजा के पास गई। "महाराज, सुना है, आपके पास रत्नों को छाननेवाली छलनियाँ हैं, हमारे राजा ने उन्हें माँगा है। टोकरों में रत्न आये हैं उनको छान कर वे अच्छे रत्न रखना चाहते हैं और गन्दे फेंक देना चाहते हैं।" लोमड़ी ने उससे कहा।

राजा ने उसको छलनियाँ दे दीं। लोमड़ी ने उनके छेदों में, जगह जगह छोटे छोटे पन्ने, केम्प, नील रख दिये। एक छलनी राजा के पास ले जाकर उसको यों ही फर्श पर मारी। रत्नों को नीचे बिखरा देख राजकुमारियाँ उन्हें लेने लपकीं।



"अगर रत्न चाहती हो तो मुझे कह जो दिया होता! में अन्टाक राजा से माँग कर, चार ऊँटों पर रत्न लादकर ले आती!" लोमड़ी ने कहा।

राजा ने अन्टाक राजा को अपना दामाद बनाना चाहा। उसने लोमड़ी से कहा-"रत्न की बात छोड़ो, तुम अपने राजा से कहो कि हमारी तीन लड़कियों में से किसी एक से शादी कर ले।"

"मैं नहीं जानती कि वह असल में शादी करना चाहता है कि नहीं। उनसे मालूम करके बताऊँगी।" लोमड़ी ने कहा।



दोनों नदी के पास गये। अन्टाक को गले तक पानी में खड़ा रहने के लिये कह लोमड़ी राजा के पास गई।

"हमारे राजा चालीस ऊँटों पर रत्नों को लादकर शादी के लिये आ रहे थे कि नदी में बाढ़ आ गई और बाद ऊँटों को बहा ले गई। नौकर चाकर भी नदी में डूब गये। राजा के कपड़े भी वह गये, मैं नहीं सोच पाती कि क्या करूँ?" लोमड़ी ने राजा से कहा।

उसने अन्टाक के पास आकर कहा-"राजा तुम्हें अपनी लड़की देने को मान गये हैं। शादी के लिये चलो।"

"शादी के लिये जाना हो तो कितना रुपया हाथ में ले जाना होता है, कितनी तैयारियाँ करनी होती हैं। मेरे पास एक कानी कौड़ी भी नहीं है।" अन्टाक ने लम्बा सा मुँह करके कहा।

"अगर सूझ-बूझ हो तो सब कुछ किया जा सकता है। तुम चले आओ। बाकी मैं देख लूँगी।" लोमड़ी ने कहा।

"जो चीज खो गई उसके बारे में क्यों सोचना?" कह कर, राजा अपने होनेवाले दामाद के लिये अच्छी पोषाक लेकर कुछ आदमियों के साथ नदी के पास गया। अन्टाक राजोचित वेष पहन कर राजा के साथ गया।

उसकी राजा की तीसरी लड़की से धूमधाम से शादी हुई। दावतें आदि खतम हो जाने के बाद अन्टाक को फिक्र सताने लगी। उसने लोमड़ी से कहा-"अब तक जो हुआ अच्छा हुआ। परन्तु जब मैं अपनी पत्नी को घर ले जाऊँगा, तो सारी पोल खुल जायेगी। क्या किया जाये?"

"तब की बात तब देख लेंगे।" लोमड़ी ने कहा।

कुछ दिनों के बाद शुभ मुहूर्त देखकर, राजा ने लड़की को कुछ सेना के संरक्षण में, दामाद के साथ भेज दिया। लोमड़ी उनसे कुछ पहले भागी। उसे रास्ते में ऊँटों का एक काफिला दिखाई दिया।

लोमड़ी ने काफिलेवाले से कहा-"बाबू, डाकू आ रहे हैं। आज तुम शुभ समय पर नहीं निकले। वे तेरा सब माल लूट लेंगे।" काफिले के मालिक ने लोमड़ी जिस दिशा से आई थी, उस दिशा की ओर देखा। उस तरफ धूल उड़ रही थी। वह घबरा गया। "क्या करूँ? मेरी जान बचाओ।" उसने लोमड़ी से कहा।

"वे जब आकर पूछें कि यह काफिला किसका है तो कहना यह अन्टाक महाराजा का है। वे तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेंगे।" लोमड़ी ने कहा।

लोमड़ी आगे चली गई। थोड़ी देर में राजा की सेना उस तरफ आई। राजकुमारी के साथ आये हुये लोगों ने काफिले के मालिक से पूछा-"यह काफिला किसका है?"



उस आदमी ने कहा-"अन्टाक महाराजा का।" राजकुमारी के साथवालों को यह सुन सन्तोष हुआ। लोमड़ी ने रास्ते में कुछ घोड़ेवालों से, और कुछ भेड़ों के चराने वालों से भी यहीं कहा। राजकुमारी के आदमियों ने पूछा-"ये घोड़े किसके हैं? ये भेड़ें किसकी हैं? तो उन लोगों ने जवाब दिया-"अन्टाक महाराजा के हैं।"

आखिर लोमड़ी एक राक्षस के किले की ओर गई। राक्षसों के राजा ने उसे देखकर पूछा-"क्यो, यों भागे आ रहे हो?"

"और क्या है? बस आफत आ गई है। डाकू आ रहे हैं। मैं क्या, सभी भाग रहे हैं।" जिन्दे रहे तो काफी हैं। वे लाखों की संख्या में हैं। तुम उनका क्या कर सकोगे? तुम अपनी जान बचाओ।" लोमड़ी ने कहा।

राक्षसों का राजा घबरा गया। "कैसे बचूँ! कहाँ जाऊँ?" उसने पूछा।

"तुम बड़ी भट्टी में छुपो। मैं तुम पर लकड़ियाँ डाल दूँगा। उनके जाने के बाद ऊपर उठ आना।" लोमड़ी ने कहा।

राक्षसों का राजा भट्टी में लेट गया। लोमड़ी ने उस पर लकड़ियाँ डालकर उनको आग जला दी। राक्षसों का राजा मर गया। लोमड़ी राजकुमारी की ओर उसकी सेना की अगवानी करने गई, और उनको राक्षस राजा के किले में ले आई।

वह किला देख उसी को अन्टाक महाराज का किला मान, दुल्हन और उसके साथ आये हुए लोग बहुत सन्तुष्ट हुए। अन्टाक अपनी पत्नी के साथ और पत्नी के आदमियों के साथ आराम से रहने लगा। लोमड़ी भी उनके साथ रह रही थी। एक दिन लोमड़ी ने अन्टाक के पास आकर पूछा-" मैंने तुम्हारा इतना उपकार किया है, अगर मैं मर गई तो मेरा क्या करोगे?"

"तुम्हें सिर पर रखूँगा।" अन्टाक ने कहा।

थोड़े दिनों में लोमड़ी मर गई। अन्टाक ने अपने वचन के अनुसार लोमड़ी की खाल की टोपी बनवाकर अपने सिर पर पहनी। यह रिवाज अब भी उस प्रान्त में है। वे लोमड़ी की चमड़ी से बनी टोपियाँ पहनते हैं।



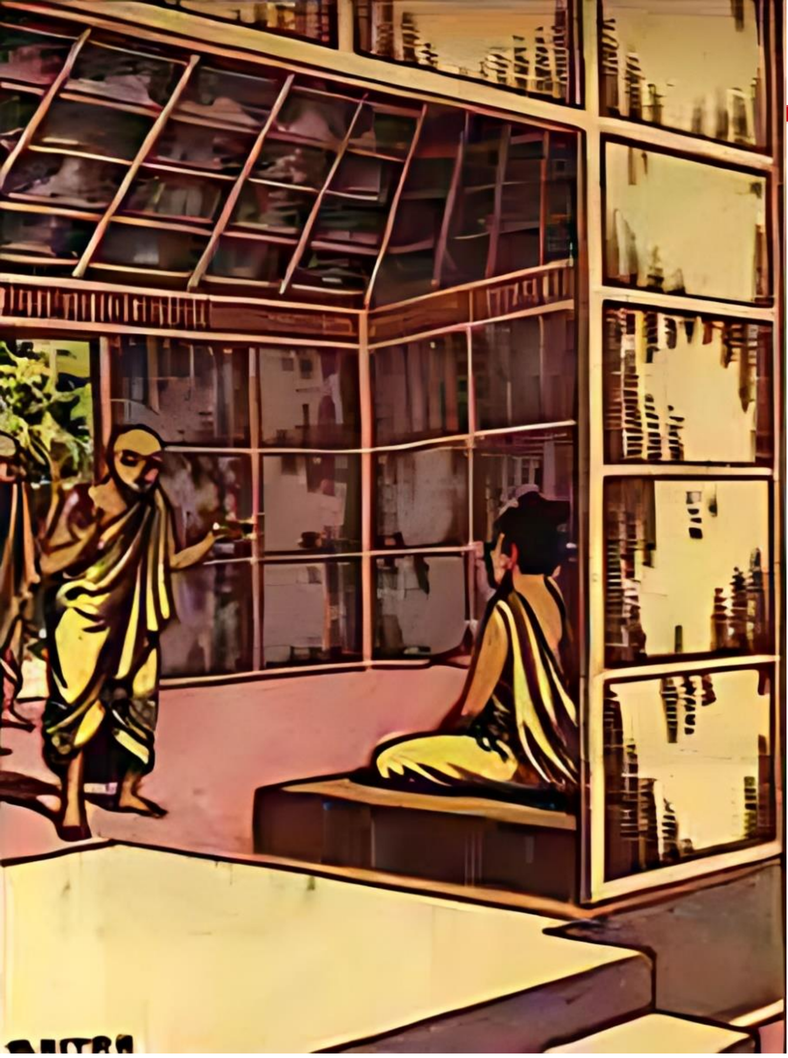


[११]

एक सप्ताह बीत गया। भद्री, अनिरुद्ध, शुद्धोधन के एक और भाई का लड़का, आनन्द किम्बिल, सुप्रबुद्ध का लड़का (यशोधरा का भाई) देवदत्त, और भग शाक्य राजकुमार मनोरञ्जन के बहाने एक ऐसी जगह गये, जो सोलह मील दूर थी। वहाँ उन्होंने अपने नौकर चाकरों को छोड़ दिया। केवल उपाली नाम के नाई को साथ लेकर वे वहाँ से एक और जगह गये। वहाँ उन्होंने अपने आभूषण आदि सब उतारकर उपाली को दे दिये, और उससे कहा कि वे सन्यास लेने जा रहे थे।

उपाली ने मन ही मन सोचा-"अगर मैं इन आभूषणों को लेकर कपिलवस्तु नगर वापस गया, तो शाक्य मुझे जीते जी नहीं छोड़ेंगे। जब ये सब सुखों का परित्याग करके सन्यास ले रहे हैं, तो मैं क्यों नहीं ले लूँ?" उसने उन आभूषणों को एक वृक्ष की शाखा से लटका दिया। वह राजकुमारों के पीछे चल पड़ा।

जब राजकुमारों को मालूम हुआ कि उसने भी उनके साथ सन्यास ग्रहण करने का निश्चय कर लिया था, तो उन्होंने उसको साथ आने दिया।



तब बुद्ध अनुप्रिया नामक ग्राम में रह रहे थे। शाक्य राजकुमारों ने उनके पास जाकर कहा-"हमें अहङ्कार माँ के दूध के साथ मिला है। हमारे रजोगुण को निर्मूल करने का एक उपाय है। अगर आपने हमसे पहले इस नाई को सन्यास दिया तो हमें उसको नमस्कार करना होगा, इससे हमारा अहङ्कार, रजोगुण खतम हो जायेगा।

बुद्ध ने उनके निवेदन पर पहले नाई उपाली को सन्यास दिया, और फिर राजकुमारों को।

उस समय बुद्ध की आयु पचास वर्ष की थी। बुद्ध हुए भी उनको बीस वर्ष हो गये थे। परन्तु उनकी परिचर्या के लिए कोई भी उनके साथ न था। उन्होंने अपने शिष्यों से कहा-"अच्छा होंगा यदि कोई मेरे साथ हमेशा रहे।" कई अर्हत यह काम करने आये। पर बुद्ध ने किसी को स्वीकार नहीं किया।

आनन्द, बुद्ध की सेवा शुश्रुषा करने के लिए मान तो गया, पर उसने कई शर्तें रखीं। वे ये थीं--बुद्ध के छोड़े हुए कपड़े वह पहने यह न कहा जाय, न यह ही कहा जाय कि वह उनके भिक्षापात्र में ही भोजन करे। अगर कोई भिक्षा के लिए बुलाये तो उसे जाने के लिए न कहा जाये। जो वह भिक्षा माँग लाये, उसे ही बुद्ध खायें। अगर कोई बुद्ध से बातचीत करना चाहे, तो बातचीत की व्यवस्था उसके द्वारा हो। अगर उसको कभी किसी विषय पर कोई सन्देह हो तो बुद्ध उसका निवारण करें। यदि उसकी अनुपस्थिति में बुद्ध कहीं कोई प्रवचन करें, तो उसके आने के बाद वे पुनः वह प्रवचन करें।

बुद्ध ने ये सब शर्तें मान लीं। तब से आनन्द बुद्ध का सेवक हो गया। आनन्द ने बुद्ध की जो सेवा की, वह आदर्शप्राय थी। जब कभी बुद्ध बुलाते, वह हाजिर होता। कहा जाता है, बुद्ध को कभी भी आनन्द को दुबारा नहीं बुलाना पड़ा।

* * * *

एक प्रवचन में बुद्ध ने कहा कि हर वस्तु का विनाश अपरिहार्य है। इसके उदाहरण में उन्होंने कहा अत्युन्नत विशाल नगर में भी कभी कभी अकाल पड़ता है। कभी कभी वह भूतों का क्रीडाक्षेत्र हो सकता है। यह उनका कहना बिल्कुल ठीक निकला। पहले नगर में छूत की बीमारियाँ शुरू हुई, उसके बाद अकाल आया, जहाँ देखो, वहीं लाशें। मृत व्यक्तियों का दहन संस्कार करनेवाले भी न थे।

लोग जाकर राजा के सामने रोये धोये। "अगर आप पर ये कठिनाइयाँ आ पड़ी हैं तो क्या मैं उनके लिए जिम्मेबार हूँ? क्या में दोषी हूँ?" राजा ने पूछा। लोगों ने कहा कि ऐसी कोई बात न थी। राजा ने पूछा कि तब क्या किया



जाय। कुछ ने कहा ऋषियों की सहायता से ये आपत्तियाँ हटाई जा सकती हैं। कई और ने कहा यदि हम बुद्ध की शरण में गये तो सब कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं। इसलिए कुछ राजकुमार, बुद्ध को विशाल नगर में निमन्त्रित करने के लिए गये। उस समय बुद्ध वेल्वन बिहार में रह रहे थे। इसलिए राजकुमारों ने महाराजा विम्बसार को वे किस काम पर आये थे, बताया।

बुद्ध के लिए कोई छोटा बड़ा न था। उनकी कृपा के लिए सब समान थे। "आप स्वयं जाकर उनसे अपने कार्य के विषय में

कहिये।" विम्बसार ने उनको सलाह दी।

राजकुमारों ने बुद्ध को विशाल नगर आने के लिए निमन्त्रित किया। बुद्ध ने तुरन्त उनका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

यह पता लगते ही महाराजा बिम्बसार ने बुद्ध के लिये राजगृह से गङ्गा के तट तक सड़क बनवाई। उसी समय विशाल नगर के बासी लिच्छिवियों ने गङ्गा पार, तट से अपने नगर तक ४८ मील लम्बी सड़क बनवाई।

वर्षा, जो उससे पहले न हुई थी, बुद्ध की यात्रा प्रारम्भ होते ही होने लगी। गङ्गा तट तक राजा बिम्बसार बुद्ध के साथ गया। और वहाँ उनकी वापसी की प्रतीक्षा करने लगा। बुद्ध नदी पार करके विशाल नगर गये।

नगर में प्रवेश करते ही उन्होंने आनन्द से कहा-"तुम भिक्षापात्र में पानी भर कर, सारे नगर में छिड़क आओ।" आनन्द ने वैसा ही किया। इस तरह करने से रोगी, निरोग हो गये। अनेक लोग आनन्द के पीछे पीछे बुद्ध की महिमा की प्रशंसा करने लगे।

बुद्ध ने राजमहल में पहुँचकर वहाँ उपस्थित जनता को उपदेश दिया। वे

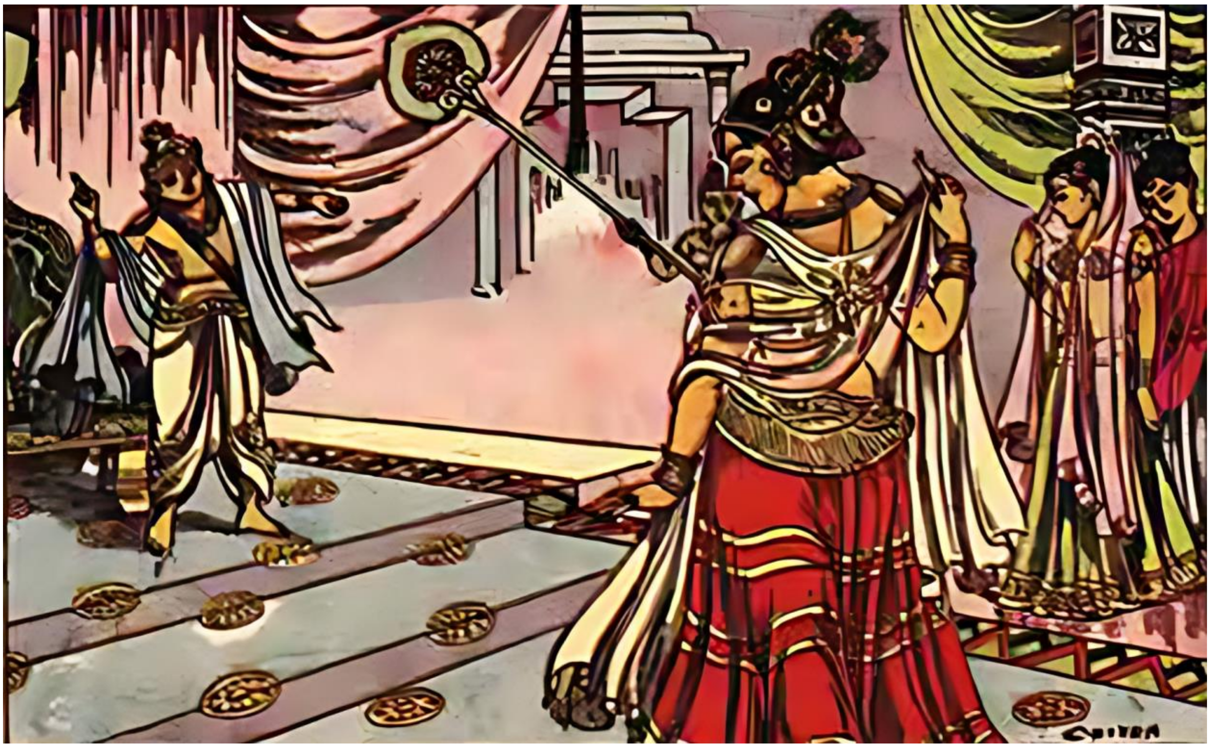


विशाल नगर में कुछ दिन रहे। जब वे वापस जा रहे थे, तो कुछ लोगों ने उनको अपने घर निमन्त्रित किया। वे उनके घर एक दिन रहे। अगले दिन उन्होंने गङ्गा पार की। विम्बसार राजा के साथ वे फिर राजगृह वापस चले आये।

विम्बसार महाराजा को पता लगा कि विशाल नगर में अम्बपाली नाम की एक प्रसिद्ध राजनर्तकी थी। उसी के कारण विशाल नगर की ख्याति देश देशान्तर में फैली हुई थी। उसे ऐसा भी लगा क्योंकि उस जैसी राजनर्तकी राजगृह में न थी, इसलिये वह विशाल नगर की तरह मसिद्ध न था। बिम्बसार ने भी लिच्छिवियों की तरह अपने नगर में एक राजनर्तकी नियुक्त करने का निश्चय किया।

उसने घोषणा की कि नगर में, या नगर के आसपास रहनेवाली सुन्दर राजकुमारियाँ उसके पास आयें।

इस तरह आई हुईं राजकुमारियों में सालावती नाम की राजकुमारी सबसे अधिक सुन्दर थी। राजा बिम्बसार ने उसको राजनर्तकी पद पर नियुक्त किया।





उसने बहुत-सा धन और वस्तुयें सालावती को उपहार में दीं। इस राजनर्तकी के कारण राजगृह की कीर्ति भी बढ़ी। राजा के लड़के, अभय ने इस राज नर्तकी से प्रेम किया।

कुछ दिनों में सालाबती गर्भवती हो गई। राजनर्तकियाँ किसी को यह नहीं जानने देती कि वे गर्भवती हैं। अगर उनकी लड़की होती है तो उसका वे पालन पोषण करती हैं, अगर लड़का होता है, तो उसे जङ्गलों में फेंक देती हैं।

इस परम्परा का पालन करते हुए सालावती ने अपने गर्भ के बारे में किसी को कुछ नहीं कहा। यह कहकर कि उसकी तबीयत ठीक न थी, वह घर पर ही रहने लगी। समय पूरा होने पर उसके एक लड़का हुआ। उस बच्चे को जङ्गल में छोड़ आने के लिए कहकर, सालावती, स्नान आदि के बाद, यथापूर्व लोगों के सामने आने लगी।

बिचारे उस लड़के को नौकर एक गढ़े में डाल कर घने जङ्गल में छोड़ आये। उसी दिन बिम्बसार का लड़का, अभय भी जङ्गल में घूमने गया। अभय ने देखा कि कौवे किसी चीज़ को घेरे हुए थे। यह सोच कि वे किसी खाने की चीज के चारों ओर बैठे थे, अभय ने अपने नौकरों को सब कुछ जानने के लिए भेजा। उन्होंने आकर बताया कि गढ़े में एक लड़का था और लड़का अभी जिन्दा था। कौवे उसको कुरेद नहीं रहे थे। बल्कि उसकी रक्षा करते से लगते थे।

अनाथ जान कर अथवा पिता के स्वाभाविक प्रेम के कारण उसको उस लड़के पर दया आई। उसने उसका नाम जीवक

(सजीव) रखा। वह उसे घर ले गया और दासियों द्वारा उसका पालन पोषण करने लगा।

जीवक बढ़कर आठ साल का हो गया। एक दिन जब वह और राजकुमारों के साथ खेल रहा था, तो उन्होंने कहा-"अरे, तेरी माँ नहीं है।" जीवक इस पर शर्मिन्दा हुआ। उसने अभय के पास जाकर पूछा-"पिता जी! मेरी माँ कौन है?"

"बेटा, मैं ही तेरा पिता हूँ। पर तुम्हारी माँ मैं नहीं जानता। तुझे किसी ने जङ्गल में फेंक दिया था, वहीं तुम मुझे मिले।" अभय ने कहा।

यह सुन जीवक को एक बात पता लगी कि वह अपने पिता की सम्पति का उत्तराधिकारी न था। उसे कोई न कोई पेशा करना होगा और पेट भरना होगा। अट्ठारह शास्त्र हैं। चौसठ कलायें हैं। इनमें से किसका वह अभ्यास करे.... इस विषय में बहुत सोचकर जीवक ने आखिर वैद्य विद्या सीखने का निश्चय किया। उसे लगा कि उसको उस वृत्ति में प्रतिष्ठा मिलेगी और प्रसिद्धि भी।



यह निश्चय करके जीवक तक्षशिला गया। वहाँ एक गुरु ढूँढकर, उसने उससे वैद्य विद्या सिखाने की प्रार्थना की। "तुम्हारा कुल और गोत्र क्या है?" गुरु ने पूछा। जीवक ने सच कहने में सङ्कोच किया। उसने कहा-"मैं महाराजा विम्बसार का पोता हूँ, और अभय का लड़का हूँ।"

"तो तुम मुझे गुरु दक्षिणा में क्या दे सकोगे?" गुरु ने पूछा।

"मैं अपने लोगों को बिना कहे ही चला आया हूँ। इसलिए मैं साथ कुछ

भी नहीं लाया हूँ। अगर कृपा करके आपने मुझे अपना शिष्य बनाया तो मैं सेवा शत्रुषा करके अपना ऋण चुका लूँगा।" जीवक ने कहा।

यह गुरु प्रायः अपने शिष्यों के पास से हजार मोहरें लिया करता था। तो भी जीवक को देखते ही उन्हें लगा कि वह विद्या का पात्र था। इसलिए उसने उसको अपने शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया और उसको वैद्य विद्या सिखाने लगा। जो और सोलह वर्षों में न सीख पाते थे, जीवक ने वह सब सात साल में ही सीख लिया।

एक दिन जीवक ने अपने गुरु से कहा-"गुरु जी, मुझे आपके पास और कितने साल सीखना होगा?"

गुरु ने उससे कहा-"तुम चार दिन का अवकाश ले लो। नगर के द्वार से सोलह मील तक की जगह को सावधानी से देखो, वहाँ तुम्हें कोई ऐसी चीज़ अगर दिखाई दे, जैसे जड़ियाँ, फूल, फल, जो औषधी के काम न आये, उन्हें इकट्ठे कर लेना। उसके बाद बताऊँगा कि तुम्हारी शिक्षा कब पूरी होगी।"

जीवक, चार पाँच दिन तक घूमता रहा आखिर खाली हाथ वापस आकर उसने गुरु से कहा-"मैंने बहुत खोजा, पर मुझे कहीं भी कोई ऐसा फल या फूल या जड़ी मिली, जो औषधी के काम न आये।

"बेटा, तुम्हारी शिक्षा समाप्त हो चुकी है। अब कोई ऐसा गुरु नहीं है, जो तुम्हें कुछ सिखा सकेगा।" गुरु ने जीवक से कहा। फिर उसने जीवक को तीन चार दिन की रसद देकर अपने आदमियों के साथ उसको घर भिजवा दिया।

(अभी है)



CHANDAMAMA (Hindi) DECEMBER 1959 Regd. No. M. 5452



बुद्ध चरित्र